ओ३म्

पंच महायज्ञों के श्रुति मंत्रों का सार्थक गायन

गीताहुति
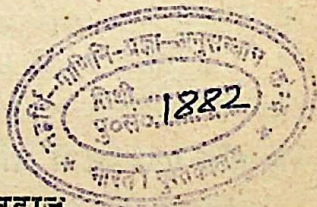
प्रणेता
देवनारायण भारद्वाज

प्रकाशक
अनिल प्रकाशन
बरौला जाफराबाद, दयानन्दनगर, अलीगढ़।

सृष्टि सं० १९७२९४९०९१

प्रथम संस्करण	सं० २०४७ वि०	मूल्य
१०००	सन् १९९० ई०	१० रुपया

श्री देवनारायण भारद्वाज की अन्य कृतियाँ:-

- स्वागी स्वराज्य संग्रामी
- मुक्तायन
- यज्ञ अर्चना
- गीतस्तुति
- नई किसनई
- प्रवर्तक
- श्रुतिशाला
- विन्दु विन्दु बोध
- बोधयामिनी

★ बोधरत्न माला

गद्य रचनायें प्रकाशनाधीन

★ अक्षय सत्यनारायण व्रतकथा
★ पवित्रापी वेदवाणी
★ आयभावना के सुलभ लाभ
★ वृक्ष जीव विचार

गीताहुति प्रकाशन में आर्थिक सहयोग के हेतु धन्यवाद

- श्रीमती दर्शनदेवी भारद्वाज — ५००)
  प्रधाना स्त्री आर्यसमाज आजमगढ़।
- श्री सत्यप्रकाश गुप्त — २००)
  उपमंत्री आर्यसमाज वैदिक आश्रम अलीगढ़।
- श्री सुरेन्द्रसिंह रावत — १०१)
  उपप्रधान आर्यसमाज वैदिक आश्रम अलीगढ़।
- श्री रामदीन आर्य — १०१)
  मंत्री आर्यसमाज वैदिक आश्रम अलीगढ़!

मुखपृष्ठ सज्जा तपोभूमि मथुरा के सौजन्य से साभार

प्रकाशक:—
देवदत्त झा
बरौला जाफराबाद, दयानन्दनगर
अलीगढ़।

भाव शुभाशी : कवि प्रत्याशी

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की महती अनुकम्पा से लुप्त प्राय: वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार समस्त भूमण्डल में तुमुल स्वर से हो रहा है। वेदमन्त्र छन्दोबद्ध शैली में नाद, लय, आरोह, अवरोह और गेय रूपमें उपस्थित हैं। उनका हिन्दी में भाषांतर गद्यात्मक रूप में अनेक विद्वज्जनों ने किया है। दैनन्दिनी जीवन में सार्वजनिक उपयोग के लिए पंच महायज्ञों का विधान हैं जिनसे मानव का ऐहिक तथा पारलौकिक कल्याण होता है। पं० देवनारायण भारद्वाज जी ने गीताहुति में ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना मन्त्रोंका संगीतात्मक रूपसे भावार्थ देकर आर्यजगत का महान उपकार किया है। ब्रह्म का नाद ब्रह्ममें रूपाँतर जनमानसको आह्लादित करेगा। लेखकका यह कार्य स्तुत्य है।

रघुनाथ मिश्र विद्यालंकार

साहित्याचार्य, एम०ए० संस्कृत, इतिहास, राजनीतिशास्त्र

प्राचार्य डी०ए०वी० स्नातकोत्तर महाविद्यालय आजमगढ़।

कविवर देवनारायण भारद्वाज ऊर्ध्वगामी प्रवृत्ति के सुसंकृत कवि हैं। उन्होंने भारतीय अमृतत्व का मन्थन कर कई नये रत्न दिए हैं। गीताहुति उन्हीं रत्नों में से एक है। कवि गीत को जीवन सङ्गीत मानता है जिसका ताल लय सम आरोह अवरोह सुर व आलाप प्रकृति की देन हैं।

वेदों की ऋचाओं का हिन्दी रूपान्तर बड़ा ही कठिन कार्य है, निःसन्देह कवि को पूर्ण सफलता मिली है। लाभ हानि यश अपयश से परे स्वान्तः सुखाय ऐसा उत्कृष्ट प्रणयन कवि की आत्मिक अनुभूतियों का साधनात्मक स्वरूप है

भौतिक भागदौड़ जीवन की आपाधापी में ऐसी ही रचनाएें मानव मन को शांति दे सकती हैं। मानवमात्र एवं अखिल सृष्टि सेवा ही धर्म है।

आपके स्तुत्य असाध्य एवं अनिवर्चनीय स्वर-सरगम का अभिनन्दन है। वन्दन है।

सूँड़ फैजाबादी

अध्यक्ष हिन्दी साहित्य सम्मेलन

आजमगढ़ उ० प्र०।

आपकी कविता से सुशोभित स्मारिका (आदर्श) समय से प्रकाशित होगई है, आपके स्नेहसिक्त सहयोगहेतु आपका वारंबार धन्यवाद । जो दवते हैं, न दवाते हैं, वे ही आर्य पुरुष होते हैं ।

पं० रूपचन्द दीपक (वेद प्रवक्ता)
आर्यसमाज, शृङ्गारनगर, लखनऊ

आपकी भेजी 'गीतस्तुति' प्राप्त कर मैं एक विशेष प्रकार के हर्ष का अनुभव कर रहा हूं । कृपया आपके अथक परिश्रम और इसके सुसफल प्रकाशन के लिए हार्दिक वधाई स्वीकार करें ।

महात्मा महेन्द्र मुनि
वानप्रस्थ–सन्यास आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार ।

श्री सत्यप्रकाश गुप्त आपकी गीतस्तुति से सत्सङ्ग में वड़ी श्रद्धा से गीत सुनाते हैं। आशीर्वाद सहित– डा० जानकीदेवी धीर
पूर्व रीडर अलीगढ़ विश्व विद्यालय
मंत्राणी स्त्री आर्यसमाज, वेदिक आश्रम अलीगढ़ ।

'गीतस्तुति' की प्रतीकात्मक शैली यत्र-तत्र मंत्रों के शब्दों का जैसे का तैसा प्रयोग कर उन्हें काव्यगीत का स्वरूप प्रदान करना गीतकार का अभिनव प्रयोग है । कई गीत इतने सहज, वोधगम्य और गेय बन पड़े हैं कि पाठक पढ़ते पढ़ते गायक बन जाता है ।

पं० अयोध्याप्रसाद वसिष्ठ
दैनिक 'हिन्दुस्तान' ८–५–८८ से

हे प्रभो आशीष दाता, देव ! शत शत शत नमन,
मिल गया जीवन उसे मुरझा रहा था जो सुमन ।
यदि महा उपकार का बदला चुका सकता नहीं,
तो वन्दना के स्वर समर्पित आर्य कविवर को सही ।
हो रही जिनकी उपेक्षा जग कृतघ्नी से सतत,
कर रहा आराधना उन आर्य कवियों की 'सुमत' ।

श्री गिरीशचन्द्र गुप्त 'सुमत'
कोरिया, हरदोई उ. प्र.

आभार के उद्‌गार

धन्य धन्य देव ओ३म् जिन्होंने संसार को अपनी श्रुति वाणी प्रदान की। धन्य देव दयानन्द जिन्होंने उसको पहिचान कर मानव ही क्या प्राणि मात्र के कल्याणार्थ नित्य पंचयज्ञ विधि सन्धान की। तभी तो यह सौभाग्य नामात्म देव, देवनारायण भारद्वाज को प्राप्त हुआ। उन्होंने इन वरेण्य मंत्रों पर आधारित गीतमालाएँ उद्गान कीं। प्रस्तुत पुस्तक की सभी रश्मियों के मंत्र गीत साप्ताहिक आर्य सन्देश, आर्य मित्र, आर्य जगत यथा अन्यान्य आर्य पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। पाठकों के पत्रों द्वारा उन्हें हार्दिक हर्ष की अनुभूति हुई है। अस्तु पत्रों के सम्पादकों के साथ साथ वे पाठक भी धन्य हैं जिन्होंने इस रूप में कवि को प्रोत्साहन प्रदान किया।

कविवर देवनारायण भारद्वाज की कृति के गीत दूर दूर तक उक्त पत्र पत्रिकाओं द्वारा प्रसारित हुए.किन्तु इन्हें पुस्तकाकार करने का श्रेय प्रकाशक श्रीं देवदत्त झा को है जिन्होंने अपने हाथों से अक्षरों का संचयन कर मुद्रण कराया। श्रेय उनको भी है जिन्होंने आर्थिक सहयोग एवं त्रुटि परिशोधन में श्रम प्रदान करने का पूर्ण योग दिया।

माननीय पं० गिरधारीलाल शास्त्री पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष अलीगढ़ विश्वविद्यालय, पूर्व हिन्दी प्रवक्ता कविराज विजय गुप्त कौशिक एवं पंडित कृष्णचन्द्र राजार्य 'मयंक' को हार्दिक धन्यवाद है जिन्होंने प्रकाशन से पूर्व ही पढ़कर समुन्नत एवं सुरम्य बनाने में मार्ग दर्शन प्रदान किया। मैं आर्यमगढ़ के विद्वान हिन्दी प्रवक्ता श्री कपिलदेव राय,वेदवक्ता पं०रघुनाथ मिश्र विद्यालङ्कार प्राचार्य दयानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय एवं राष्ट्रीय स्तर के मान्य हास्य कवि श्री दानबहादुर मूंड फैज़ाबादी की भी आभारी हूं जिन्होंने 'गीताहुति' को पढ़कर अपने सद् विचार प्रस्तुत किये।

अल्प समय, साधन और सहयोग के कारण त्रुटियों से बचा तो नहीं जासका किन्तु उनको कम करनेका प्रयास किया है। अलीगढ़ और आजमगढ़ की सात सौ किलोमीटर की दूरी प्रकाशक व कवि के हृदयों में अन्तर न कर सकी। यज्ञ मंत्र और इनकी पुस्तिकायें सर्वत्र सुलभ हैं। पाठक उनसे मिलाप करने की कृपा करेंगे। वैसे शोधनपत्र मीं लगा दिया गया है। विद्वज्जन ही नहीं साधारण आर्यजन के सुझावों का स्वागत आगामी संस्करण हेतु रहेगा। इस के लेखन प्रकाशन एवं वाचन में सभी सहयोगियों को हार्दिक धन्यवाद।

जगन्नाथ निवास
नया रैदोंपुर
आजमगढ़।

चैत्र शुक्ल-१, २०४७

कवि सह धर्मिणी–
दर्शनदेवी भारद्वाज
प्रधाना, महिला आर्यसमाज आर्यमगढ़।

दो शब्द

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाजके प्रथम नियम में लिखा है कि सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है। पुनः तृतीय नियम में वेदों की व्यापकता एवं महनीयता की ओर इङ्गित करते हुए उन्होंने लिखा है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक हैं। वेद का पढ़ना पढ़ाना सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। वास्तव में मानव जीवन को संयमित और मर्यादित होकर चरमोत्कर्ष को उपलब्ध करानेके लिए जिन गुणों एवं व्यवहारोंकी आवश्यक्ता होती है वे सभीं बातें बीज रूप में वेदों में विद्यमान हैं। इसीलिए वेदों की भाष्य परम्परा चली है।

आर्य जगत का यह परम सौभाग्य है कि वैदिक साहित्य के गम्भीर व्याख्याता एवं सुधी काव्यशिल्पी श्रीदेवनारायण भारद्वाज जी ने अपने अथक परिश्रम से आवश्यक प्रासंगिक मंत्रों का पद्यानुवाद हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करके वैदिक साहित्य के क्षेत्र में अनोखा कार्य किया हैं। इस पुस्तकको सात रश्मियों में विभक्त किया है। विभाजन का आधार महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा संकलित उन मन्त्रों से हे जो विभिन्न अवसरों पर व्यवहृत होते हैं। प्रथम रश्मि का शीर्षक 'यज्ञमय मानव निर्माण' जिसमें उषा काल में मानव को प्रभु का स्मरण कराते हुए उसे सुख सबृद्धि की प्रेरणा देते हैं। द्वितीय रश्मि में सध्या के समस्त मंत्रों का सरल एवं सरस पद्यानृवाद है।

तृतीय रश्मि की गीतमाला में ईश्वरस्तुति प्रार्थना तथा उपासना के आठ मन्त्रों का सुन्दर काव्यानुवाद प्रस्तुत किया है चतुर्थ रश्मि 'देवयज्ञ गीतमाला में ओं अमृतोपस्तरणमसि आचमन मन्त्र से ओं सर्व वै पूर्ण स्वाहा तक के मन्त्रों का भावानुवाद किया है। पंचम रश्मि का शीर्षक पावमानी गीतमाला है। इसमें बारह मन्त्रों का पद्यानुवाद है। षष्ठम रश्मिके स्वस्ति-वाचन और सप्तम रश्मि माला में शान्तिप्रकरण के सभी मन्त्रों का सरल पद्यानुवाद किया है। कविता गम्भीर चिंतन को भी कलकलनिनादिनी सदा नीरा पवित्र गङ्गा की धारा में परिवर्तित कर देती हैं जिसमें सामान्य जन मानस तक अवगाहन करके समान रूप से प्रफुल्लित हो उठता है।

आदरणीय भारद्वाजजीने वेदमन्त्रोंके गुप्त रहस्यों को उदघाटन करके ऐसी वाटिका की रचना की हैं जिसमें विभिन्न प्रकार के प्रसूनों की सुगन्ध से पाठक भाव बिभोर हो जाता है। आर्य जगत इस रचना से सर्बदा उनका ऋणी रहेगा। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वह श्री भारद्वाज जी की काव्यप्रतिभा को पुष्पित करे ताकि भबिष्य में आर्यसमाजकी सेवा करसकें।

कपिलदेव राय

भू०पू० प्रधान आर्यसमाज, प्रवक्ता वेस्ली इण्टर कालेज आजमगढ़।

माँ श्रीमती मुन्नीदेवी प्रभूदयाल

मातृ-वन्दना

वन्दन मां !

देवी मां !!

प्यारी मां !!!

आपने वेद माता की ओर,
वेद माता ने सर्व माताओं
की ओर प्रेरित किया।

— समर्पण —

'गीताहुति' की सात रश्मियां
आर्यत्व की ओर
सतत प्रोत्साहन प्रदायिनी
प्रतिनिधि मातृशक्ति
श्रीमती डा० जानकीदेवी धीर
को सादर समर्पित है।

कृतज्ञ—
देवनारायण भारद्वाज

शोधन

पृष्ठ	गीत पंक्ति	शब्द संख्या	शुद्ध शब्द	पृष्ठ	गीत पंक्ति	शब्द संख्या	शुद्ध शब्द
१४	२०	५	अपनी	६४	६	४	की
१६	१८	१	उसकी	,,	१०	४	फल
२१	१७	४	उन्हें	६८	३	४	अग्नि
२२	१७	८	को	,,	१२	४	अर्च
२३	६	६	प्राणी	७२	१६	४	उदगाता
३१	१३	२	भोग हो	७७	६	५	हो
३२	६	२-३	लिये हो	८०	११	५	करतब
३६	१५	२	कोई	८१	४	२	ये
,,	१६	५	सघन	८५	१२	५	संवर्ता
३७	१३	६	पतंग	,,	१७	४	औ
३८	७	८	इनसे	८७	७	२	हमको
४०	४	२	नीचे	९०	१६	२-५	कर्म-बचाओ
४१	शीर्षक	१	सुपति	९५	१३	१०	धोते
४४	१६	५	है	९७	१६	२	छेड़
४५	७	५	जो	१०१	स्थायी पंक्ति		जिससे हम
५६	शीर्षक	२	यज्ञ	१०६	१५	४	सुमंग
,,	७	८	भी	१०९	३	२-३	जायें-हिंसा
,,	१३	४	उढ़ौना	११२	१२	५	पसारा
,,	१६	१	प्रेय	११४	१३	४	बन्दना
५७	१६	२	मन	,,	१६	४	स्रोता
५८	११	६	भव्य	११८	१६	६	को
,,	१५	३	प्रभा	१२०	४	२	जिससे
६०	१५	३	हमको	१३२	१६	४	गीत
६१	५	३	जो	१३३	५	२	हमको
,,	१६	२	समर्पित	१३५	१५-१६	५	वर्षों

प्रथम रश्मि

मानव निर्माण गीतमाला

१ निशा गई आ गई उषा

ओ३म् प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रा वरुणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातस्सोममुत रुद्रं हुवेम।
ऋ०७।४१।१

प्रभु गई गई यह निशा गई, आ गई उषा सुखयाली है।
गुण गान तुम्हारा गाने को, मिल गई उषा उजियाली है॥

प्रिय प्रभा रूप हे अग्निदेव,
ऐश्वर्य रूप हे इन्द्रदेव,
सन्मित्र सभी के सर्वोत्तम,
वरणीय श्रेष्ठ हे वरुण देव।

सर्वत्र व्याप्त परमेश्वर को, आगई सूर्य में लाली है।
गुणगान तुम्हारा करने को, मिल गई उषा उजियाली है॥

यह प्रातकाल अभिनन्दनीय
मन शान्त मृदुल शुभ शोभनीय,
ब्रह्माण्ड सकल के स्वामी का
हम करलें दर्शन सेवनीय।

जग के पोषक परमेश्वर की, छाई छवि नयन निराली है।
गुणगान तुम्हारा करने को, मिल गई उषा उजियाली है॥

जग सृजन प्रेरणा करते हो,
पुचकार पोषणा करते हो,
उद्दण्ड घमण्डी पाखण्डी
दे दण्ड चेतना करते हो।

यह विनय प्रीति परमेश्वर की, करती सबको जयशाली है।
गुणगान तुम्हारा करने को, मिल गई उषा उजियाली है॥

---

२ साथ ओ३म का

ओ३म् प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता ।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह ॥
ऋ० ७।४१।२

निज हृदय मध्य पाया दर्शन, जो सेव्य जनक सा शोभन है ।
जब साथ ओ३म् का प्राप्त किया, तब हुआ हृदय उदबोधन है ॥

यह प्रातकाल जयशील करे
हमको ऐश्वर्य सुशील करे
आदित्य पुत्र के वह समान
पावन ब्रह्मांड सुन [illegible] रे

यशगान उसी का गाया है, कर लिया हृदय का शोधन है ।
जब साथ ओ३म् का प्राप्त किया, तब हुआ हृदय उदबोधन है ॥

जो जग का धारण कर्ता है,
मन मान्य सभी का भर्ता है,
वह ज्योति पुंज शासक प्यारा
तम तोम ताप वह हर्ता है ।

यह ब्राह्म मुहूर्त प्रभा प्रात, पल आत्म ओ३म् सम्बोधन है ।
जब साथ ओ३म् का प्राप्त किया, तब हुआ हृदय उदबोधन है ॥

है दीन कौन है कौन पुष्ट,
है कौन शिष्ट है, कौन दुष्ट,
सब ज्ञात उसे गोपन रहस्य
दे रहा दण्ड कर रहा तुष्ट ।

प्रभु के पावन किरण करों का, हर कहीं हुआ अनुमोदन है ।
जब साथ ओ३म् का प्राप्त किया, तब हुआ हृदय उदबोधन है ॥

---

३ सहयोगी श्रेष्ठ

ओ३म् भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः ।
भग प्रणो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ॥
ऋ० ७।४१।३

सम्वन्ध जोड़कर सज्जन से, हम स्वयं सुसज्जन हो जायें ।
सब अपने सहयोगी साथी, नर श्रेष्ठ वीरवर हो जायें ॥

भजनीय रूप उत्तम नेता
पूर्ण सृष्टि के सृजक प्रणेता
धन मोक्ष सत्य सुख दाता हो
भक्त जनों के बुद्धि प्रचेता ।

आराधना सत्य की आजाये, हमको मिल जायें प्रज्ञायें ।
सब अपने सहयोगी साथी, नर श्रेष्ठ वीर वर हो जायें ॥

कौन बुद्धि से बढ़कर अच्छी
यही हमारी करे सुरक्षा
धेनु दुग्ध बल पोषण कारी
गति प्रगति अश्व सो संरक्षा ।

पोषणा शक्ति के वाहन से, ऐश्वर्य शुभ्र सब आ जायें ।
सब अपने सहयोगी साथी, नर श्रेष्ठ वीर वर हो जायें ॥

भरपूर शक्ति का भोजन हो
वाहन से गमन नियोजन हो
प्रिय श्रेष्ठ वीर भी साथ चले
प्रभु जहां कहीं आयोजन हो ।

कर्तव्य कर्म अनुपालन से, सब दिवस सुखद शुभ हो जायें ।
सब अपने सहयोगी साथी, नर श्रेष्ठ वीर वर हो जायें ॥

---

४ दिव्य सुमति

ओ३म् उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत् प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम् ॥४॥
ऋ० ७।४१।४

सुख शान्ति सम्पदा दो हमको, भण्डार नाथ कुछ सदय करो।
इस सूर्योदय के साथ साथ, दे दिव्य सुमति सुख उदय करो ॥

पूर्वाह्न मध्य अपराह्न समय
सम्पूर्ण दिवस हो हर्ष अभय
धन वैभव के तुम दाता हो
अब इस प्रभात में बनो सदय।

जग के इस नन्हें प्राणी को, संभव विराट यह विनय करो।
इस सूर्योदय के साथ साथ, दे दिव्य सुमति सुख उदय करो ॥

तुम मघवन् हो धनवान महा
मेरे भगवन् भगवान महा
तव कृपा विन्दु के छींटों से
मिल जाय यहां कल्याण महा।

भगवन्त लिये वैभव अनन्त, यह भाग्य शील नभ निलय करो।
इस सूर्योदय के साथ साथ, दे दिव्य सुमति, सुख उदय करो ॥

उदित हुआ रवि प्यारा प्यारा
लेकर दिनारम्भ उजियारा
दो श्रेष्ठ जनों की बुद्धि वृद्धि
दिनभर दो पुरुषार्थ सहारा।

हो स्वाभिमान मुस्कान वान, धन ध्येय सफल वर विजय करो।
इस सूर्योदय के साथ साथ; दे दिव्य सुमति सुख उदय करो ॥

---

५ प्रभु नायक

ओ३म् भग एव भगवां अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुर एता भवेह॥
ऋ० ७।४१।५

क्यों राह और की हम देखें, अब नाथ साथ तुम आ जाओ।
हो जाय हमारा भाग्योदय, यदि तुम नायक बनकर आओ॥

भगवान तुम्हारा धन अपार,
दो दान हमें होकर उदार,
फिर हम भी दाता बन जायें,
निज निम्न जनों को लें उबार।

लेकर अपनी भगवत्ता को, भगवान साथ अब आ जाओ।
हो जाय हमारा भाग्योदय, यदि तुम नायक बनकर आओ॥

हम एक नहीं सारे सज्जन
तुम्हें पुकारें सभी आर्यजन
याचना तुम्हीं से करते हैं
सामान्य और सब विद्वज्जन।

सबको परमेश सुखी कर दो, सुख मुझको भी कुछ दे जाओ।
हो जाय हमारा भाग्योदय, यदि तुम नायक बनकर आओ॥

तुम चलो जहां आगे आगे
हम चलें वहीं पीछे भागे,
यह लोक तुम्हें अवलोक चलें
हम रहें सदा जागे जागे।

हे लोक अग्रगामी नेता, पथ हमको तुम दिखला जाओ।
हो जाय हमारा भाग्योदय, यदि तुम नायक बनकर आओ॥

---

६ तेजवान कर दो

ओ३म् तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। ओं बलमसि बलं मयि धेहि।
ओ३म् ओजोऽस्योजो मयि धेहि। ओं मन्युरसि मन्यु मयि धेहि।
ओ३म् सहोऽसि सहो मयि धेहि।

अपने परम पराक्रम से, हमको परिरम्भित कर दो।
हे नाथ कृपा से अपनी, हमको अनुकम्पित कर दो॥

परमेश आप हैं तेजवान
हमको भी कर दो तेजवान,
हे परम वीर्य परमात्म देव
हमको भी कर दो शौर्यवान।

बलवान प्रभो निज बल से, हमको भी बल थम्बित कर दो।
हे नाथ कृपा से अपनी, हमको अनुकम्पित कर दो॥

हे ओ३म् आप हैं ओजवान
हम को भी कर दो ओजवान,
हे ओ३म् पराक्रम के द्वारा
हमको करदो दृढ़ शक्तिवान।

निज तेज ओज बल द्वारा, हमको स्वालम्बित कर दो।
हे नाथ कृपा से अपनी, हमको अनुकम्पित कर दो॥

हे मन्यु क्रोध के कर्णधार
तव क्रोध दुष्ट को दे सुधार,
दो हमको अपनी क्रोध शक्ति
कर नष्ट दुष्ट जग दूँ उबार।

सहनेश्वर दे सहन शक्ति, हमको सहसन्धित कर दो।
हे नाथ कृपा से अपमी, हमको अनुकम्पित कर दो॥

---

७ श्रुति श्रेय सार यज्ञोपवीत

१ ओ३म् यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।

२ ओ३म् यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ।

वेदोक्त कर्म शुभ यज्ञ हेतु, अधिकार चिह्न यज्ञोपवीत ।
यह तार-तार है धर्म सार, श्रुति श्रेय सार यज्ञोपवीत ॥

स्कन्ध कन्ध स्थापित है
यह ब्रह्म सूत्र पावन महान।
पिता प्रजापति उपदेशों से
यह हुआ सूत्र हमको प्रदान ।

परमात्म ज्ञान का सूचक है, रखता पवित्र यज्ञोपवीत ।
यह तार-तार है धर्म सार, श्रुति श्रेय सार यज्ञोपवीत ॥

निर्देश रूप में मूर्तिमान
आयुष्य हेतु हितकारी हो
यह निर्मल सूत्र धारता हूं
बल प्राप्त तेज उपकारी हो ।

सत्कर्म मर्म का दाता है, जीवन को करता है पुनीत ।
यह तार-तार है धर्म सार, श्रुति श्रेय सार यज्ञोपवीत ॥

हे ब्रह्म सूत्र यज्ञोपवीत
मैं तुझे यज्ञ हित धरता हूं,
कर्तव्य ग्रन्थि से गुन्थित मैं
यज्ञोपवीत से बँधता हूँ ।

हर समय सजग यह रखता है, हर समय जगाये धर्मजीत ।
यह तार-तार है धर्म सार, श्रुति श्रेय सार यज्ञोपवीत ॥

---

८ यज्ञ मय जीवन

ओ३म् आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पताँ श्रोतं यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतां मनो यज्ञेन कल्पतात्मा यज्ञेन कल्पतां ब्रह्मा यज्ञेन कल्पतां ज्योतिर्यज्ञेन कल्पताँ स्वर्यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्। स्तोमश्च यजुश्च ऋक च साम च बृहच्च रथन्तरं च। स्वर्देवाऽअगन्मामृताऽअभूम प्रजापतेः प्रजा अभूम वेट् स्वाहा।

(१)

यज्ञ नाम है विष्णु ब्रह्म का, दे यज्ञ मोक्ष का आकर्षण।
सर्वस्व यज्ञ को अर्पित कर, यह मिला यज्ञ का सुखवर्षण।।

(२)

मम आयु यज्ञ को अर्पित है, प्रिय प्राण यज्ञ को अर्पित है।
मम चक्षु कर्ण सब मन वाणी, मम आत्म,यज्ञ को अर्पित है।
वर ब्रह्म वेद की विद्यायें, सम्पूर्ण यज्ञ की जो दर्पण।
सर्वस्व यज्ञ को अर्पित कर, यह मिला यज्ञ का सुखवर्षण।

(३)

निजजगत ज्योति सब स्वर्ग कुंज लोकाधारित भू पृष्ठ पुंज।
पुरुषार्थ यज्ञ मम श्रेष्ठ कर्म, सब उसे समर्पित गीत गुंज।
ममगीत स्तुति की आहुतियां, हो यज्ञदेव हित कृति कर्षण।
सर्वस्व यज्ञ को अर्पित कर, यह मिला यज्ञ को सुखवर्षण।

(४)

ऋक् यजुः साम वन्दन अथर्व, इनके गाये जो गान सर्व।
बन प्रजा प्रजापति को अर्पित, कर पालन प्रभु आदेश पर्व।
हर कुशल क्षेम हो मोक्ष मगन, प्रभु ग्रहण हमारा हो तर्पण।
सर्वस्व यज्ञ को अर्पित कर, यह मिला यज्ञ का सुखवर्षण।

---

९ राष्ट्र यजन

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्।
राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम् ।
दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू
रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम् ।
निकामे निकामे न पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः
पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम् ।

हे ब्रह्म ! ब्राह्मण गुरुओं में, श्रुति ब्रह्म तेज का सृजन करें।
है यज्ञ विष्णु, है विष्णु राष्ट्र, हम सभी राष्ट्र का यजन करें ।।

हों अस्त्र शस्त्र रथ शक्तिदक्ष, क्षत्रिय अरियों को चूर करें ।
गौ वाणी-भू पोष कामना, बल अश्व वृषभ भरपूर करें ।
भाग्यवती हों सजग नारियां सन्तान श्रेष्ठ निर्माण करें ।
हों सत्य युवा रथ महा दृढ़ी, जो शत्रु उग्र निष्प्राण करें ।

जो अरि विद्रोही आतंकी, करके दण्डित जय वरण करें ।
है यज्ञ विष्णु, है विष्णु राष्ट्र, हम सभी राष्ट्र का यजन करें ।।

हों वीर सभी यजमान यहां, जो विद्वानों का मान करें ।
कार्य योजना पर्जन्य पूर्ण, औषधि अनाज फल यान वरें ।
योग क्षेम हर काम काज में, सुख वृष्टि राष्ट्र संभरण करें ।
वैज्ञानिक आविष्कारों से, उत्तम नैतिक आचरण भरें ।

हे ब्रह्म ! ब्राह्मण गुरुओं में, श्रुति ब्रह्म तेज का सृजन करें।
है यज्ञ विष्णु है विष्णु राष्ट्र, हम सभी राष्ट्र का यजन करें ।।

१० हम हों व्रत के अनुगामी

ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम् । तेन र्ध्यासमिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि स्वाहा । इदमग्नये इदन्नमम ।

व्रतपते नाथ व्रतनामी, व्रत में हों चित्त चरिष्यामी ।
हे नाथ व्रतों के स्वामी, हम हों व्रत के अनुगामी ॥

ब्रह्मचर्य गृह वानप्रस्थ व्रत
सन्यास अन्त में रहकर रत,
मैं करूँ आचरण जीवन में
हे नाथ शक्ति दो हमको सत ।

जीवन विकास आयामीं, व्रत हमको हों उद्दामी ।
हे नाथ व्रतों के स्वामी, हम हों व्रत के अनुगामी ॥

जो किया सत्य व्रत धारण है
प्रभु केवल करना पारण है,
तव कृपा सिद्ध व्रत मेरा हो
हमको अभीष्ट व्रत तारण है ।

हे दयालु अन्तरयामी, हम बनें व्रतों के हामी ।
हे नाथ व्रतों के स्वामी, हम हों व्रत के अनुगामी ॥

हम प्रथक देह है प्रथक अन्य
हो जाय ज्ञान ये आत्म धन्य,
धर्मात्म सभ्य विद्वान बने
मिल जाय हमें अमरत्व पुण्य ।

हम व्रत कामी निस्कामी, हों भक्ति मुक्ति परिणामी ।
हे नाथ व्रतों के स्वामी, हम हों व्रत के अनुगामी ॥

---

११ पुत्र कुशलता - पिता प्रतिष्ठा

ओं तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि। ओं आयूर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि। ओं वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मयि देहि। ओं अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण।

ओं मेधां मे सविता आदधातु। ओं मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु। ओं मेधां मे अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ।

यदि पुत्र कुशलता पायेंगे, तो पितु का मान बढ़ायेंगे।
जब पुत्र सबल हो जायेंगे, तब पिता प्रतिष्ठा पायेंगे॥

प्रभु अग्नि हमारे पिता आप
सर्वत्र व्याप्त हो रहे आप,
यह अग्नि नाम परमेश्वर का
तप ताप प्रकाशित अग्नि आप।

बल प्रभा तेज हम पायेंगे, जीवन ज्योतित हो जायेंगे।
जब पुत्र सबल हो जायेंगे, तब पिता प्रतिष्ठा पायेंगे॥

इस तन के रक्षक परमेश्वर
कर दो रक्षा हे परमेश्वर,
प्रिय आप आयु के दाता हो
अब आयु बढ़ाओ परमेश्वर,

प्रभु से हम रक्षा पायेंगे, तब चिरञ्जीव हो जायेंगे।
जब पुत्र सबल हो जायेंगे, तब पिता प्रतिष्ठा पायेंगे॥

विज्ञान बोध के दाता आ
अपना वर्चस्व बढ़ाता आ
तन में यदि कहीं न्यूनता हो,
उनकी सम्पूर्ति कराता आ।

जब सुदृढ़ देह हम पायेंगे, तब प्रभु से नेह बढ़ायेंगे।
जब पुत्र सबल हो जायेंगे, तब पिता प्रतिष्ठा पायेंगे॥

---

१२ पितरों के प्रति श्रद्धा

ओ३म् ऊर्ज्जं वहन्तोरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधास्थ तर्पयत मे पितृन्। यजु० अ० २ म० ३४

जग जन्म काल से ही मेरा, जो पाल-पोष उत्थान करे।
अपने बड़े पूज्य परिवारी, हम उन सबका सम्मान करे॥

जीवित पितरों के प्रति श्रद्धा
उनकी सेवा श्राद्ध महा है,
हों तृप्त पितर जन सब जिससे
सच तर्पण तो वही कहा है।

अपने असमर्थ वृद्ध जन की, आओ हम तृप्ति महान करें।
अपने बड़े पूज्य परिवारी, हम उन सबका सम्मान करें॥

भोजन वस्त्र चिकित्सा देकर
उनकी सेवा सत्कार करें,
प्रतिदिन उनकी आज्ञा लेकर
सामयिक प्रेम व्यवहार करें।

उनसे नित बातचीत करके, उनको सन्तोष प्रदान करें।
अपने बड़े पूज्य परिवारी, हम उन सबका सम्मान करें॥

यह सम्पदा बोध जो पाया
है सभी पूज्य पितरों का धन,
है मेरा क्या सब उनका है
मन वचन कर्म से हो अर्पण।

विनत भाव से करें नमस्ते, मत किंचित हम अभिमान करें।
अपने बड़े पूज्य परिवार हम उन सबका सम्मान करें॥

---

१३ आहुति सहयोगी देवों को

ओ३म् अग्नये स्वाहा । ओम् सोमाय स्वाहा । ओम् अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा । ओम् विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा । ओम् धन्वन्तरये स्वाहा । ओम् कुह्वै स्वाहा । ओम् अनुमत्यै स्वाहा । ओम् प्रजापतये स्वाहा । ओम् सहद्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा । ओम् स्विष्टकृते स्वाहा ।

हम सब देवों को बलि देकर, परिपुष्ट सदा करते आयें।
अपने सहयोगी देवों को, चलो भोग हम मित्र लगायें ॥

प्रभु अग्नि प्रकाशक को आहुति
जठराग्नि प्रदीपन को आहुति
प्रभु सोम सृजक से शान्ति हेतु
प्राण अपान पुष्टि को आहुति ।

विद्वानों की सन्तुष्टि हेतु, यह आहुति सर्वदा चढ़ायें।
अपने सहयोगी देवों को, चलो भोग हम मित्र लगायें ॥

धन्वन्तरि वैद्य चिकित्सक को
विस्मय कारी बल पोषक को
कर्मानुकूल फलदाता प्रभु
या न्यायाधीश निरीक्षक को ।

कुल पिता प्रजापति शासक को, देकर आहुति हर्ष बढ़ायें ।
अपने सहयोगी देवों को, चलो भोग हम मित्र लगायें ॥

द्यौ धरती तक विस्तार किया
वैज्ञानिक आविष्कार किया
यह उनका भाग हमें देकर
हमने उनका सत्कार किया ।

प्रभु सभी सहायक मित्रों को, पूर्ण तृप्ति तक भोज खिलायें ।
अपने सहयोगी देवों को, चलो भोग हम मित्र लगायें ।

---

१४ यह भाग तुम्हारा है

ओं सानुगायेन्द्राय नमः। ओम् सानुगाय यमाय नमः। ओम् सानुगाय वरुणाय नमः। ओम सानुगायः सोमाय नमः। ओम् मरुद्भ्यो नमः। ओम् अद्भ्यो नमः। ओम् वनस्पतिभ्यो नमः ओम् श्रियै नमः। ओम् भद्रकल्यै नमः। ओम् ब्रह्मपतये नमः ओम् वास्तुपतये नमः। ओम् विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ओम् दिवाचरेभ्यो भूतेभ्यो नमः। ओम् नक्तञ्चारेभ्यो नमः। ओम् सर्वात्म भूतये नमः। ओं पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।

तुम से उपकार हमारा है, हम पर अधिकार तुम्हारा है।
जो मैं ने भोग्य दिया तुमको, प्रिय वर वह भाग तुम्हारा है।१।

ऐश्वर्य इन्द्र के गुणग्राहक
यम समान विधि न्याय प्रसारक
वरुण ब्रह्म के वरणीय भक्त
पायें भोग सोम जग धारक।

प्रिय मरुत सान्त्वना दायक को,जल को यह भाग बिचारा है।२

घर मूसल और ओखली को
धान्य वनस्पति लता कली को,
राज्य श्री पुरुषार्थ श्रेय हित
सुभग भद्र जग काल बली को।

वेद ब्रह्म के विस्तारक को, मैं ने यह भाग प्रसारा है।

वास्तुकार शुभ शिल्प सृजक को
जगत सहायक देव श्रमिक को
दिवस निशा में विचरण वाले
सब उपकारी जीव जनक को।

सब मात पिता गुरु अतिथि पुत्र, सेवक जो भाग उचारा है

---

१५ बलि भाग उन्हें भी

शुनां च पतितानां च स्वपचां पापरोगिणाम् ।
वायसानां कृमीणां च शनैर्कनिर्वपेद् भुवि ।।

अति सूक्ष्म बृहत सारे प्राणी, इस सृष्टि हेतु उपयोगी हैं ।
हम देते हैं बलि भाग उन्हें, जो मानव के सहयोगी हैं ।।

पशु स्वान पतित चाण्डाल श्वपच
कृमि कीट मीत कौआ पक्षी
हम इनको भोजन देते हैं
ये सभी मनुज के हैं रक्षी

हम अंश उन्हें भी देते हैं, जो निर्धन पापी रोगी हैं ।
हम देते है बलि भाग उन्हें, जो मानव के सहयोगी हैं ।।

इस सृष्टि कृष्टि का हर प्राणी
मानव के लिये सहायक है
खेती व्यापार आचरण में
जग-जीवन का उन्नायक है ।

हमने पायी यह कर्म-योनि, कर्मानुसार वे भोगी हैं ।
हम देते हैं बलि भाग उन्हें जो मानव के सहयोगी हैं ।।

कृमि कीटादिक मक्खी मच्छर
इन्हें नियन्त्रित भी रखना है,
रुधिर चूस यदि रोग बढ़ावें
तो वहिष्कार भी करना है ।

नित यथा शक्य हम इनको दें, ये सेव्य नहीं प्रतियोगी है ।
हम देते हैं बलि भाग उन्हें, जो मानव के सहयोगी है ।।

---

१६ अतिथि तुम्हारा स्वागत

१ ओ३म् तद यस्यैवं विद्वान व्रात्योऽतिथिर्गृहाना गच्छेत् ।
२ ओ३म् स्वयमेनमभ्युदेत्य ब्रूयाद् व्रात्य क्वाऽवात्सीर्व्रात्योदकं व्रात्य तर्पयन्तु व्रात्य यथा ते प्रियं तथास्तु व्रात्य यथाते वशस्तथास्तु व्रात्य यथा ते निकामस्तथास्त्विति । अथ कां० १५ सू० ११

१ स्वयमेव अतिथि तुम आओ, सत्कार योग्य ले जाओ ।
हे अतिथि तुम्हारा स्वागत, उपदेश हमें दे जाओ ।

२ अथर्ववेद के काण्ड पन्द्रह में, प्रिय अतिथि देव का वर्णन है ।
अज्ञात आगमन तिथि जिसकी, उसको सत्कार समर्पण है ॥
प्रिय अतिथि देवको जल अर्पण, आवास अतिथि को देना है ।
भोजन सम्मान दान देकर, श्रुति बोध अतिथि से लेना है ॥

प्रिय सम्बन्धी सन्यासी, हे वानप्रस्थ आ जाओ ।
हे अतिथि तुम्हारा स्वागत, उपदेश हमें दे जाओ ॥

३ विद्वान श्रेष्ठ मानव सुशील, कल्याण गृहस्थी का करता ।
उपदेश विविध विद्या देकर, प्रियअतिथि योग्य आगे बढ़ता ॥
वह रात्रि एक दो तीन चार, जिसके घर में आकर रहता ।
क्रमशः पृथ्वी अन्तरिक्ष द्यौ, वह लोक पुण्य रक्षण करता ॥

जितने भी दिवस रहो तुम, सन्मार्ग दिखाते जाओ ।
हे अतिथि तुम्हारा स्वागत, उपदेश हमें दे जाओ ॥

४ वह रहे अपरिमित कालअतिथि, कल्याण अपरिमित जो करता ।
घरनाम अतिथि निज स्वार्थकरे, तो तिरस्कार सहना पड़ता ॥
आगन्तुक अभ्यागत में है, अन्तर अतिथि और आमंत्रित ।
सत्कार करें वह मर्यादित, है जैसा वेदों में वर्णित

निर्लज्ज अधर्मी लोभी, कर दया यहाँ से जाओ ।
हे अतिथि तुम्हारा स्वागत, उपदेश हमें दे जाओ ॥

१७ खाता किन्तु खिलाकर

१ ओ३म् अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्यय शुष्मिणः।
प्र प्र दातारं तारिष ऽऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥

२ ओ३म् मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्य सस्य। नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी।

दो पदे चौ पदे मानव पशु, सबको भोजन का दान करो।
हे ओ३म् अन्नपति हम सबको, बलदायक अन्न प्रदान करो ॥

रोग रहित सुख पोषक प्यारा
रुचिर प्रचुर मृदु विविध प्रकारा,
उपलब्ध सहज सम्पाचित हो
प्रभु परमोत्तम अन्न तुम्हारा।

जो कृषक वैश्य दें अन्न हमें, प्रभु उसको स्वस्थ महान करो।
हे ओ३म् अन्नपति हम सबको, बल दायक अन्न प्रदान करो ॥

अनुदार अज्ञानी प्राणी
सब व्यर्थ अन्न को खाते हैं,
केवल खाने को जीते जो
खाते खाते मर जाते है।

सब सखा सहायक शासक को, भरपूर अन्न प्रदान करो।
हे ओ३म् अन्नपति हम सबको, बलदायक अन्न प्रदान करो ॥

स्वयं अकेला खाने वाला
केवल पाप आप खाता है,
जो खाता किन्तु खिलाकर के
वह खाकर पुण्य कमाता है।

प्रभु यज्ञ शेष जो खाता है, वह बलशाली भगवान करो।
हे ओ३म् अन्नपति हम सबको, बलदायक अन्न प्रदान करो ॥

१८ आर्य करो

ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
अपघ्नन्तो अराव्णः ।

गति प्रगति समुन्नति के द्वारा, इन्द्र हमारा विस्तार करो।
हे इन्द्र हमें तुम आर्य करो, यह सकल आर्य संसार करो ॥

ओ३म् हमें वरदान दीजिये
सुख सम्पति दें पुष्ट कीजिये,
अखिल विश्व को आर्य बनायें
दुष्ट भाव अघ नष्ट कीजिये ।

कर सकें आर्य निर्माण आर्य, गुण आर्य श्रेष्ठ संसार करो।
हे इन्द्र हमें तुम आर्य करो, यह सकल आर्य संसार करो ॥

मन धर्म धनी तन उत्तम हो
हर मानव जब स्वयँ आर्यम् हो,
हों सभी परस्पर सहयोगी
तो कृण्वन्तो विश्वमार्यम् हो ।

आर्यत्व हृदय में पहले हो, फिर नगर गाँव परिवार करो।
हे इन्द्र हमें तुम आर्य करो, यह सकल आर्य संसार करो ॥

अघ स्वार्थं द्वेष कुविचार सभी
नर निन्दित अत्याचार सभी
जब इनका विनाश हो जाये
तब आर्य बने संसार सभी ।

प्रथम स्वयँ फिर विश्व बनायें, बल उसमें आर्य अपार भरो।
हे इन्द्र हमें तुम आर्य करो, यह सकल आर्य संसार करो ॥

१६ सङ्गठन गीत

ओ३म् सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ। इडस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ।१।

मेरे नायक ओ३म् प्रकाशक, निश्चय आनन्द बढ़ाते हो।
ऐश्वर्य शक्ति प्रभु हमको दो, हर वस्तु आप ही लाते हो।
हम स्तुति गान बन्दना करते, वेदों में प्रभु दर्श भरा है।
संगठन–एकता–समता में, सुयश हर्ष उत्कर्ष भरा है।

ओ३म् सङ्गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते। २।

संग चलें हम कहें सुसंगत, हो हृदय एक चिन्तन समान।
अपने विद्वान पूर्वजों सा हो समाज में बितरण समान।
मिलकर बढ़े करें श्रम मिलकर उचित विभाजन हर्ष भरा है।
संगठन–एकता–समता में, सुयश हर्ष उत्कर्ष भरा है।

ओ३म् समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्त मेषाम्। समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।

मन्त्र मन्त्रणा अपनी समान मत भेद रहित हों सभा समिति।
सम रस मन में सम विचार हों ईश्वर देता यथायोग्य गति।
परमेश सदा सुख बरसाता पर भाग कर्म स्पर्श भरा है।
संगठन–एकता–समता में सुयश हर्ष उत्कर्ष भरा है।

ओ३म् समानी आकूतिः समाना हृदयानि वः। समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ।४।

हों समान संकल्प हमारे सुन्दर समान हो कार्य रीति।
अन्तःकरण एक सा मन हो शोभायमान हो जाय प्रीति।
हो प्राप्ति पात्र हों जिसके हम समता में आदर्श भरा है।
संगठन–एकता–समता में सुयश हर्ष उत्कर्ष भरा है।

निशा शयन गीत

२० शिव सङ्कल्पवान अन्तर्मन

(१)

ओ३म् यज्जाग्रतो दूरमुदैतिदैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमं ज्योतिषाँ ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।

यह मन दिव्य शक्तियों वाला है यह दूर-दूर तक जाता है।
जो जगता है उसका जाता उसका भी जो सो जाता है।
चिन्तनकी ज्योति ज्ञान साधन इन्द्रिय सर्वका करे प्रकाशन।
शिव संकल्पवान बन जाओ मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन।

(२)

ओ३म् येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीरा।
यद् पूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।

धीर मनीषी जिसके द्वारा करते सदैव वरणीय कर्म।
विज्ञान पूर्वक जिसके द्वारा तरते यज्ञों के सर्व मर्म।
अपूर्व पूज्य अन्तःवासी हृदय देह में करते वर्तन।
शिव सङ्कल्पवान बन जाओ मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन।

(३)

ओ३म् यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्जोतिरन्तर मृतं प्रजासु।
यस्मान्नऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।

सब ज्ञान-ध्यान का साधन मन आधार चेतना का मन है।
अमृत्यु बोध का यही प्रदर्शक स्थैर्य धैर्य का साधक मन है।
हो सम्भव कोई काम नहीं यदि बने नहीं सहयोगी मन।
शिव सङ्कल्पवान बन जाओ मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन।

(४)

ओ३म् येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम। येन यज्ञस्ता स्ते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।

सब भूत भविष्यत वर्तमान जिसने चिन्तन में जकड़ा है।
अग्निहोत्र से अश्वमेध तक शुभ कर्म सभी को पकड़ा है।
सातों होताओं का वाहन मुख नाक कान ये और नयन।
शिव सङ्कल्पवान बन जाओ मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन।

(५)

ओ३म् यस्मिन्नृचः साम यजूंसि यस्मिन प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः यश्मिश्चित् सर्वमोतं प्रजानाँ तन्मे मनःशिवसङ्कल्पमस्तु।

ऋक् यजुः साम जिसमें ठहरे श्रुति ओत प्रोत चेतना ज्ञान।
द्यौ अन्तरिक्ष पृथ्वी सबका रथ नाभि धुरो आरों समान।
अन्तःकरण मध्यथम्बित सब प्रजा प्राणि की शक्ति सुचेतन।
शिव सङ्कल्पवान बन जाओ मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन।

(६)

ओ३म् सुषारथिरश्वनिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इ व। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।

ज्यों कुशल सारथी कस लेता अपने रथ घोड़ों की लगाम।
जिधर चाहता उधर पहुंचता गति शील लक्ष्य कर धरा धाम।
निज दमन शक्ति से सबलों को झटका देता त्यों चंचल मन।
शिव सङ्कल्पवान बन जाओ ओ मेरे प्यारे ओ अन्तर्मन।

—०※०—

द्वितीय रश्मि

वैदिक संध्या गीतमाला

१ सन्मार्ग सुभग ये बुद्धि चले

गायत्री मन्त्र :-

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत् सवितुर्वरेण्यम भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। य०।३६।३

ओ३म् नाम है मुख्य तुम्हारा, हे जग रक्षक प्रभु त्राण करो।
ओ३म् प्राण प्रिय दुखः विमोचन, हे सुखदायक कल्याण करो॥

वह सविता जग का उत्पादक
ऐश्वर्य सर्व का दाता है।
उसका ही हमने वरण किया
कर लिया उसी से नाता है।

आ गये हृदय में ओ३म् देव, तो निज गुण हमें प्रदान करो।
ओ३म् प्राण प्रिय दुख विमोचक, हे सुखदायक कल्याण करो॥

देदीप्य स्वयं हो रहे देव
जो हमको भी दमकाते हैं।
उनका अनुपम अति शुद्ध रूप
हम भर्ग ध्यान में लाते हैं।

गुण रूप ज्ञान देकर अपना, जीवन ज्योतित जयवान करो।
ओ३म् प्रान प्रिय दुख विमोचक, हे सुखदायक कल्याण करो॥

ओ३म् तुम्हारा कर वरण ध्यान
हम एक याचना करते हैं।
प्रेरित करदो बुद्धि हमारी
बस यही कामना करते हैं।

सन्मार्ग सुभग ये बुद्धि चले, प्रभु मङ्गलमय विज्ञान करो।
ओ३म् प्राण प्रिय दुख विमोचक, हे सुखदायक कल्याण करो।

---

२ रस धार कृपा की

आचमन मन्त्र :-

ओ३म् शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्रवन्तु नः। य०।३६।१२

चारों ओर हमारे प्यारे प्रभु सुखदायक जल बरसाओ।
प्रभु ध्येय हमारा पूरा हो रस धार कृपा की सरसाओ॥

जल शान्ति स्रोत सुखकारी हो
गुण दिव्य सतत संचारी हो।
हो जाये पीकर तृप्ति जिसे
सब ओर सुमङ्गलकारी हो।

सर्वत्रव्याप्तहो आप प्रभो कुछ बूंद इधर भी बिखराओ।
प्रभु ध्येय हमारा पूरा हो रस धार कृपा की सरसाओ॥

प्राणी का प्राण यही जल हैं
परिपूर्ण आप से जल थल है।
जो हमने ईश अभीष्ट किया
मन वही माँगता पल-पल है।

आनन्द भोग सरस शुद्ध रस आप वही प्रभु बरसाओ।
प्रभु ध्येय हमारा पूरा हो रस धार कृपा की सरसाओ॥

सर्वत्र व्याप्त हो परमेश्वर
सर्वत्र हर्ष दो परमेश्वर।
सर्वत्र कष्ट मम मिट जाये
छा जाये सुख रस परमेश्वर।

हे ईश दिव्य सुख बरसाओ मत कहीं किसी को तरसाओ।
प्रभु ध्येय हमारा पूरा हो रस धार कृपा की सरसाओ॥

---

३ तेरा मन्दिर

इन्द्रिय स्पर्श :-

ओ३म् वाक् वाक् । ओं प्राणः प्राणः । ओं चक्षुः चक्षुः । ओं श्रोत्रम् श्रोत्रम् । ओं नाभिः । ओं हृदयम् । ओं कण्ठः । ओं शि[illegible] ओं बाहुभ्यां यशोबलम् । ओम करतल करपृष्ठे ।

हे सप्त लोक ब्रह्मांड ईश बल अंश हमें कुछ मिल जायें।
यह देह सबल तो हो जाये पर तेरा मन्दिर बन जाये॥

रसना वाणी प्रश्वास श्वास
दो नयन और दो कर्ण भास।
बलवान नाभि बलवान हृदय
हो कण्ठ सबल सिर श्रुति प्रकाश।

यश एक भुजा में तव आये दूसरी भुजा जब बल लाये।
यह देह सबल तो हो जाये पर तेरा मन्दिर बन जाये॥

सुयश मिले तो करतल अपना
कर पृष्ठ शक्ति का हों ढकना।
कर में कर्तव्य समाये जब
अधिकार तभी होता अपना।

बलवान देह ये बन जाये पर सत्कर्मों में लग जाये।
यह देह सबल तो हो जाये पर तेरा मन्दिर बन जाये॥

यह शक्ति स्रोत तेरा जल है
देता स्पर्श शान्ति संबल है
हो रोज ओज इन अङ्गों में
जब हट जाता इनका मल है।

ऊपरी मैल जल से जाये मन से भी कल्मष हट जाये।
यह देह सबल तो हो जाये पर तेरा मन्दिर बन जाये॥

४ तन मन की करी मँजाई

मार्जन मन्त्र :-

ओ३म् भूः पुनातु शिरसि। ओम भुवः पुनातु नेत्रयो। ओम स्वः पुनातु कण्ठे। ओम मह पुनातु हृदये। ओम जनः पुनातु नाभ्याम्। ओम तपः पुनातु पादयो। ओम् सत्यं पुनातु पुनः शिरसि। ओम् खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र।

मन्दिर शरीर अँगनाई है, जब बढ़नी रोज लगाई है।
तन-मन की करी मंजाई है, तब आत्म चेतना आई है॥

भू-भूमि प्राणप्रिय रक्षक है
करता पुनीत सिर शिक्षक है
भुवः-व्योम दुखनाशक ईश्वर
नयनों का ज्योति प्रशिक्षक है।

स्वः-सूर्यलोक सुखदाई है, प्रभु कण्ठ शुद्धता दाई है।
तन-मन की करी माँजाई है, तब आत्म चेतना आई है॥

महः महनीय पूज्य परमेश्वर
यह हृदय शुद्ध करता ईश्वर।
जनः- ईश सबका उत्पादक
यह शुद्ध नाभिः करता सर्वेश्वर।

तपः ज्ञान परिश्रम साँई है, कर चरण शुद्ध गति दाई है।
तन-मन की करी मँजाई है, तब आत्म चेतना आई है॥

सत्यम् - नाम ईश अविनाशी
शुद्ध बुद्ध करता सुखराशी।
खम-ब्रह्म सर्व व्यापक स्वामी
शुचि अङ्ग करे सब सहवासी।

की जिसने यह रँगड़ाई है, चिर चमक उसी ने पाई है।
तन-मन की करी मँजाई है, तब आत्म चेतना आई है॥

---

५ प्राणायाम बढ़ाये चल

प्राणायाम :-

ओम भूः ओं भुवःओं स्वः ओं महः ओं जनः ओं तपः ओं सत्यम् ।

प्राण वायु बढ़ जाये देह में, तब यहीं योग का उद्गम हो ।
प्राणायाम बढ़ाये बल को, यह जीवन ओ३म् मनोरम हो ।।

अन्दर की दूषित निकल वायु
बाहर की आये शुद्ध वायु ।
आयाम बढ़ें इन प्राणों के
मिल जाये दीर्घ आनन्द आयु ।

उर योग द्वार खुल जाने से, परमात्म आत्म का संगम हो ।
प्राणायाम बढ़ाये बल को, यह जीवन ओ३म् मनोरम हो ।।

प्रभु भूःभुवः स्वः महः शक्तियाँ
जनः तप्तः की सप्त उक्तियां ।
इस पृथ्वी से सूर्य लोक तक
सब हरें व्याधि यह व्याहृतियां।

सब दोष निवारण हो जाये, मृदु अन्तर्मन तब जग-मग हो ।
प्राणायाम बढ़ाये बल को, यह जीवन ओ३म् मनोरम हो ।।

ये सप्त लोक गुण सात यही
जीवन के पुण्य प्रभात यही
ये अंश हमें भी मिल जायें
सुखमय हो जाये गात यही ।

रवि-रश्मि ये सप्त मिलें, तो सरस आत्म का सरगम हो ।
प्राणायाम बढ़ाये बल को, यह जीवन ओ३म् मनोरम हो ।।

---

६ अघ आत्म गर्व का हो विनाश

अघमर्षण मन्त्र :-

ओ३म् ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धातपसोऽध्यजायतः। ततो रात्र्य-जायत। ततःसमुद्रो अर्णवः।१। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी।२। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत् दिवंच पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।३।

सर्वज्ञ सर्वव्यापक प्रभू की, है अनुपम सर्व शक्तिमत्ता।
परमेश्वर विराट के सम्मुख, है अत्यल्प आत्म की सत्ता॥

२ प्रभु ज्ञानपूर्ण तप बल द्वारा, हों प्रकट वेद की विद्यायें।
हो कार्य रूप में प्रकृति प्रकट, इससे ही महा प्रलय आये।
जल से ही आकाश भरा सारा, लोक पिण्ड इससे बन जाये।
यों चक्र काल मैं इनकी ही; हों सम्वत्सर की गणनायें।
सब प्रकृति तत्व गतिशींल किए, की अर्णव समुद्र गुणवत्ता।
परमेश विराट के सम्मुख, है अत्यल्प आत्म की सत्ता।

३ वश कर्ता धर्ता स्वामी ने, दिन निशि का काल विभाग किया।
पूर्व सृष्टि की भांति नई का, आरम्भ सहज ये राग किया।
सब सूर्य-चन्द्र द्यौ पृथ्वी का, जग अन्तरिक्ष का जाग किया।
सन्तुलित लोक लोकान्तर में, आकर्ष शक्ति अनुराग किया।
प्रभु की इस अद्‌भुत रचना की, है सचमुच अकथ महत्ता।
परमेश विराट के सम्मुख, है अत्यल्प आत्म की सत्ता।

४ ब्रह्मांड विविध के निर्माता, यह सृष्टि अपार तुम्हारी है।
कैसे पार तुम्हारा पायें, यह मानव की लाचारी है।
तुम सूर्य सूर्या के प्रभा पूर्या, तव प्रखर ज्वाल उजियारी है।
अघ-आत्म-गर्व का हो विनाश, यह नन्हीं आत्म हमारी है।
इस भव भंगुर में भाव भरी, भगवान आपकी भगवत्ता।
परमेश विराट के सम्मुख, है अत्यल्प आत्म की सत्ता।

---

७ आदित्य ईश

मनसा परिक्रमा मन्त्र :- (१)

ओम् प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नमः इषुभ्यो नमः एभ्यो अस्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।१।

जिस ओर तुम्हारे ओ३म् चरण, हो वहीं हमारा भी विचरण।
मैं करूँ अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओम् नमन ॥

प्रिय अग्नि पूर्व के ज्योतित पति
सम्मुख आदित्य उन्हीं की कृति
अन्ध वन्ध से करते रक्षा
निज किरण वाण विस्तार सगति

विद्वान आप्त या सूर्य किरण- दे तमस तोड़ हो प्रभा करन।
मैं करूँ अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओम् नमन ॥

परमेश ओ३म् को नमस्कार
आदित्य ईश को नमस्कार
जो अन्धकार में प्रभा करे
उन रश्मि करों को नमस्कार।

जो जगत तुम्हारे का क्षण-क्षण सद गुणी वाण करते रक्षण।
मैं करूँ अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ॥

यदि भाई द्वेष करे हमसे
या हम भी द्वेष करें उससे
हर द्वेष छोड़ प्रभु न्याव नियम
हम सहज स्नेह बर्तें सबसे।

तेरे जबड़े में सुदृढ़ सगन, हो जाय सहज ही द्वेष दलन।
मैं करूँ अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ॥

---

८ इन्द्र सुरपति (२)

ओ३म् दक्षिणा दिगन्द्रिोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नमः इषुभ्यो नमः एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।

जिस ओर तुम्हारे ओ३म् चरण, हो वहीं हमारा भी विचरण।
मैं करूँ अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ॥

दक्षिण के इन्द्र देव अधिपति
दांये प्रिय पितर उन्हीं की कृति
वचन वाण अज्ञान मिटायें
वे अधर्म की भेंट वक्र गति ।

ऐश्वर्यवान हे इन्द्र नमन, करें मित्र सब इन्द्र अनुकरण।
मैं करूँ अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ॥

परमेश ओ३म् को नमस्कार
प्रिय इन्द्र सुपति को नमस्कार
जो अधर्म से रक्षा करते
उन पितृ वचन को नमस्कार ।

निज वक्र चाल के कृमि कण, ये कीट पतंगे आदि विषगण ।
मैं करूँ अनुगमन मन ही मन. सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ॥

यदि कोई द्वेष करे हमसे
या हम ही द्वेष करें उससे
हर द्वेष छोड़ प्रभु न्याय नियम
हम सहज स्नेह वर्तें सबसे ।

कुटिल भ्रष्ट कटु मार्ग अपावन, तज कर कुकर्म हो सदाचरण ।
मैं करूँ अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ॥

९ वरणीय वरुण (३)

ओ३म् प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमः रक्षितृभ्यो नमः इषुभ्यो नमः एभ्यो अस्तु योऽस्मान द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं बो जम्भे वध्मः।

जिस ओर तुम्हारे ओ३म् चरण, उस ओर हमारा हो विचरन।
मैं करूँ अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओहम् नमन ॥

वरणीय वरुण पश्चिम के पति
पीछे सक्रिय पुकार के प्रति
सुन दीन क्षुधित का चीत्कार
कण अन्न सुरक्षा दें सम्प्रति।

सर्पादि विषैले जीव जतन, हो जाए न हमसे मृत्यु पतन।
मैं करूँ अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ॥

परमेश ओ३म् को नमस्कार
जग क्षत्र वरुण पति नमस्कार
हो हर अभाव से रक्षा प्रभु
बल अन्न सृजक को नमस्कार।

हो जाय न विष विषय आक्रमण, ये आत्म बचाओ ईश वरुण।
मैं करूँ अनुगमन मन हीमन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ॥

यदि कोई द्वेष करे हमसे
या हम भी द्वेष करें उससे
हर द्वेष छोड़ प्रभु न्याय नियम
हम सहज स्नेह बर्तें सबसे।

है घन घन वरुण पृष्ठ पोषण, कर सकें आक्रमण से रक्षण।
मैं करूँ अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ॥

१० सोम सृजक (४)

ओ३म् उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः। तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नमः इषुभ्यो नमः एभ्यो अस्तु योऽस्मान द्वेष्टि यँ वयँ द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।

जिस ओर तुम्हारे ओ३म् चरण, उस ओर हमारा हो विचरण।
मैं करूँ अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन॥

उत्तर दिशि सोम सृजक अधिपति
दे वाम असुर से त्राण प्रगति
ये सुअजशक्तिजग व्याप्यअशनि
दे दण्ड दानवों को नित प्रति।

ये स्वयं प्रकट कीटादिक व्रण, कर नष्ट स्वस्थ कर दो तन मन।
मैं करूँ अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन॥

परमेश ओ३म् को नमस्कार
प्रभु सोम सुअज को नमस्कार
हो अशनि शत्रु से रक्षक जो
उन व्याप्य करों को नमस्कार।

सुख शान्ति आत्म में करें रमण, हों बाहर कब इसके दर्शन।
मैं करूँ अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन॥

यदि कोई द्वेष करे हमसे
या हम ही द्वेष करें उससे
हर द्वेष छोड़ प्रभु न्याय नियम
हम सहज स्नेह बर्तें सबसे।

प्रभु विद्युत का हो आवेशन, हो आत्म शान्ति का संकर्षन।
मैं करूँ अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन॥

११ विष्णु व्यापक (५)

ओ३म् ध्रुवा दिग्विष्णूरधिपति कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः। तेभ्यो नमो अधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नमः इषुभ्यो नमः एभ्यो अस्तु योऽस्मान द्वेष्टि यँ वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।

जिस ओर तुम्हारे ओ३म् चरण, उस ओर हमारा हो विचरण।
मैं करू् अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ॥

ध्रुवहृदय विष्णु व्यापक अधिपति
हो नीके वेद प्रेरणा मति
प्रभु ग्रीवा में कल्मष जाये
अज्ञान द्वेष से हो निवृति।

जो कलुष छिपा हो अन्तर्मन, उसका कर दो अब निक्षालन।
मैं करूँ अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ॥

परमेश ओ३म् को नमस्कार
जग व्याप्य विष्णु को नमस्कार
अघ दोष निवारक आप्त वचन
श्रुतिशब्द शस्त्रको नमस्कार।

काली ग्रीवा के प्राण कुधन, प्रभु विष्णु करे इनसे रक्षण।
मैं करूँ अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ॥

यदि कोई द्वेष करे हमसे
या हम ही द्वेष करें उससे
हर द्वेष छोड़ प्रभु न्याय नियम
हम सहज स्नेह वर्ते उससे।

ये वृक्ष लता के सुन्दर वन, हृदय बनायें सदा सुहावन।
मैं करूँ अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ॥

१२ सुरपति बृहस्पति (६)

ओं ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपति श्वित्रो रक्षिता वर्ष मिषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमों रक्षितृभ्यो नमः इषुभ्यो नमः एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः । अ।३।२७।६

जिस ओर तुम्हारे ओ३म् चरण, उस ओर हमारा हो विचरन ।
मैं करूँ अनुगमन मन हो मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ।

दिश ऊर्ध्व वृहस्पति गुरु अधिपति
तव अमृत ज्ञान की वर्षा कृति
संताप रोग रक्षा करता
दे स्वत्रि शल्य का स्वस्थ सुगति

हो सुखमय वातावरण सृजन, रोग दोष हर करे निवारन ।
मैं करूँ अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ।।

परमेश ओ३म् को नमस्कार
गुरु सुपति वृहस्पति नमस्कार
ऊपरी द्वेष के नित नाशक
सामर्थ्य सूत्र को नमस्कार ।

जल बिन्दु भांति ये साधु सुजन, जग में बरसाते शान्ति सुमन ।
मैं करूँ अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ।।

यदि कोई द्वेष करे हमसे
या हम ही द्वेष करें उससे
हर द्वेष छोड़ प्रभु न्याय नियम
हम सहज स्नेह बर्तें सबसे ।

गम्भीर ज्ञान का गुरु घर्षण, जग में सुख का करता वर्णण ।
मैं करूँ अनुगमन मन ही मन, सब ओर तुम्हें कर ओ३म् नमन ।।

---

१३ साथ तुम्हारा

उपस्थान मन्त्र :-

(७१)

ओं उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम् । देवं देवत्रा सूमगन्म ज्योतिरुत्तमम् । य।३५।१४

पाथेय प्रभा प्रिय आया है, तब उपस्थान यह आया है।
तन मन को शुद्ध बनाया है, तब साथ तुम्हारा पाया है॥

मिट गया हृदय से अँधियारा
हो गया हृदय में उजियारा,
दिख गए दृश्य प्रभु सद्गुण के
लिया उन्हीं का सतत सहारा।

गुण ने गुणवान मिलाया है, गुणगान तभी यह गाया है।
तन मन को शुद्ध बनाया है, तब साथ तुम्हारा पाया है॥

तिमिर रहित प्रभु रूप प्रभामय
देख लिया सुख रूप सुधामय,
उच्च उच्चतर और उच्चतम
हमें बनाए सूर्य विभामय,

सब ओर ज्योति रवि लाया है, प्रिय प्रभु से मिलन कराया है
तन मन को शुद्ध बनाया है, तब साथ तुम्हारा पाया है॥

वह देव-देव में महादेव
मिल गया हमें वह एकमेव,
हम उसका हाथ पकड़ उठते
अब दर्शन की बन गई टेव।

गुण अंश हृदय में आया है, तब नयन रूप लख पाया है।
तन मन को शुद्ध बनाया है, तब साथ तुम्हारा पाया है॥

---

१४ ओ३म् पताका

(२)

ओं उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः दृशे विश्वायसूर्यम ।
य।३३।३१

अपनानी छटा सुहानी है, तो गोद ओ३म् की पानी है।
यदि गोद मोद की पानी है, तो ओ३म् ध्वजा फहरानी है ।

प्रभु जातवेद उत्पादक है
जड़ चेतन जगत प्रकाशक है,
वह ज्ञान सूर्य जगमग स्वरूप
निज भक्त उच्च उद्धारक है।

यदि प्रगति उच्च अपनानी है, तो दिशा उसी की जानी है।
यदि गोद मोद की पानी है, तो ओ३म् ध्वजा फहरानी है ।।

जहाँ कहीं भी जिसने झांका
इन जगत वस्तुओं को आंका,
हर कहीं झलक उसकी पाई
यही बन गई ओ३म् पताका।

जागी हर वस्तु निशानी है, जिसमें आभा मुस्कानी है।
यदि गोद मोद की पानी है, तो ओ३म् ध्वजा फहरानी है ।।

हर वस्तु देखकर ज्ञान करो
अनुकूल कर्म कर मान करो,
श्रद्धा से भक्ति करो उसकी
यह ओ३म्-ध्वजा सम्मान करो।

मन भक्ति तरंगें लानी हैं, तो ध्वजा लहर लहरानी है।
यदि गोद मोद की पानी है, तो ओ३म् ध्वजा फहरानी है ।।

---

१५ प्रभु भक्ति प्राप्त फिर क्या अप्राप्त

(३)

ओं चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आ प्रा द्यावा पृथ्वी अन्तरिक्ष ँ सूर्य्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा।
य।७।४२

प्रभु भक्ति प्राप्त हो जाये, फिर क्या अप्राप्त रह जाये।
प्रभु चरण शरण जो आये, वह आत्म सबल बन जाये॥

ब्रह्मस्थ भक्त जो तेरा है
उन्नति का सफल चितेरा है,
श्रेष्ठ आत्म बल अद्भुत पाये
जिसका जीवन प्रभु प्रेरा है।

प्रभु प्रीति हृदय में आयें, तो आत्म शक्ति मिल जायें।
प्रभु चरण शरण जो आये, वह आत्म सबल बन जाये॥

सन मार्ग आत्म बल दिखलाता
वही वायु जल अग्नि बढ़ाता,
द्यौ लोक भूमि या अन्तरिक्ष
सब कहीं वही है पहुंचाता।

उसके सुमित्र बन जायें, तो ज्ञान ज्योति गह पायें।
प्रभु चरण शरण जो आयें, वह आत्म सबल बन जाये॥

यह प्रभु का बल ही तो बल है
जड़ चेतन सबका संबल
सूर्य प्रकाशक जगत आत्मा,
सब सृजक हार यह अविचलहै।

आभास यही हो जाये, तो मिलन सरल हो जाये।
प्रभु चरण शरण जो आये, वह आत्म सबल बन जाये॥

१६ स्वाधीन जियें (४)

ओं तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्। य।३६।२४

प्रलय पूर्व से ऊपर बैठा, अब निकट बैठ लें हम भी।
हमको अनन्त से देख रहा, सौ वर्ष देख लें हम भी॥

था प्रलय पूर्व की सृष्टि समय
रह जाय वही बस प्रलय समय,
आदि जन्म दाता ईश्वर ने
की वर्तमान यह सृष्टि उदय।

वह युग-युग से ही रहा जगत, सौ वर्ष जियें वह हम भी।
हमको अनन्त से देख रहा, सौ वर्ष देख लें हम भी॥

वह मेघ गर्जना तड़ित नाद
सरिताओं का कल-कल निनाद,
वन वृक्ष पक्षियों का चुहक गुंज
संगीत मधुर सम्बाद वाद।

वह आदि काल से बोल रहा, सौ वर्ष कहें सुन हम भी।
हमको अनन्त से देख रहा, सौ वर्ष देख लें हम भी॥

नाथ आप सुन्दर समर्थ
नहिं आयु हमारी जाय व्यर्थ,
स्वाधीन स्वस्थ सौ वर्ष जियें
या जियें शताधिक पर सदर्थ।

उसने ब्रह्मांड अधीन किया, स्वाधीन जियें जग हम भी।
हमको अनन्त से देख रहा, सौ वर्ष देख लें हम भी॥

---

१७ समर्पण स्वीकार करें

हे ईश्वर दयानिधे ! भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थं काममोक्षाणाँ सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः ।

परिपूर्ण पिता परमेश्वर को, हम कौन भेंट व्यवहार करें
स्वीकार करें स्वीकार करें, सर्वं समर्पण स्वीकार करें ॥

मेरे परमेश्वर दया निधे
सम्मुख तेरे यह हाथ बँधे,
क्या पास हमारे कोष तोष
कर सके कर्म क्या वेद विधे।

संकोच शील यह हृदय अङ्ग, इसको ही अङ्गीकार कर ।
स्वीकार करें स्वीकार करें, सर्वं समर्पण स्वीकार करें ॥

जप ध्यान उपासन आराधन
प्रभु कौन बड़ा है इससे धन,
कर सकें कर्म कुछ उत्तम हम
वे सभी तुम्हें हैं देव समर्पण ।

जो भेंट तुम्हारी बन जाये, व्यवहार वही आचार करें
स्वीकार करें स्वीकार करें, सर्वं समर्पण स्वीकार करें ॥

नित भक्ति भाव में वृद्धि करो
यह आत्म शक्ति समृद्धि करो,
धर्म अर्थं सब काम मोक्ष की
हे देव शीघ्र अब सिद्धि करो ।

इस जगत पन्थ को पार करें, सुख शान्ति हृदय आगार करें ।
स्वीकार करें स्वीकार करें, सर्वं समर्पण स्वीकार करें ॥

१८ नमस्ते शंकर को

नमस्कार मन्त्र:–

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च। नमः शङ्कराय च मयस्कराय च। नमः शिवाय च शिवतराय च। य।१६।४१

निज जोड़ हाथ कर नमन माथ, कर रहे नमस्ते शंकर को।
उठो आत्म अब करो नमस्ते, अपने शिव शंकर शम्भू को॥

कुछ नहीं असंभव है उसको
वह पार करे इस भव जग को
वह वरे मयोभव जग माया
तो करे मोक्ष संभव हमको।

जग जन्म पोष या मरण करण, ताण्डवकारी प्रलयंकर को।
उठो आत्म अब करो नमस्ते, अपने शिव शम्भू शंकर को॥

जग जीवों का कल्याण करे
जग माया का भी दान करे
मन प्राण इन्द्रिय सुखशाली
शंकर देकर उत्थान करे।

हे आत्म उसी को नमन करो, सुखदायक स्वयं शुभंकर को।
उठो आत्म अब करो नमस्ते, अपने शिव शम्भू शङ्कर को॥

वही तुम्हारा मङ्गल कारी
वही बनाये जग अधिकारी
हे आत्म हितैषी नाथ वही
सब जगत मोक्ष सम्पद धारी।

हे आत्म उसे अवलोक चलो, निज हृदय श्रेय अभयङ्कर को।
उठो आत्म अब करो नमस्ते, अपने शिव शंभू शङ्कर को॥

तृतीय रश्मि

प्रार्थना गीत माला

१ दुःख दूर करें

ओ३म् विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुवः यद् भद्रं तन्न आसुवः।

या।३०।३

दुर्व्यसन दोष दुख दुर्गुण सब, हे नाथ हमारे दूर करें।
सद्गुण शुभ कर्म सम्पदा से, हे नाथ हमें भरपूर करें॥

तुम सकल जगत के उत्पादक
ऐश्वर्य सर्व के तुम साधक
करते उत्पत्ति पिता सविता
हो सकल सम्पदा सम्पादक।

हम भी उत्पत्ति मनोरम कर, सब नष्ट दानवी क्रूर करें।
सद्गुण शुभ कर्म सम्पदा से, हे नाथ हमें भरपूर करें॥

दिव्य देव है रूप तुम्हारा
प्रिय पवित्र है रूप तुम्हारा
तुम्हीं हमारे सुखदाता हो
शुभ प्रेरक है रूप तुम्हारा।

चेतना चित्त में लाकर हम, चित चंचलता को चूर करें।
सद्गुण शुभ कर्म सम्पदा से, हे नाथ हमें भरपूर करें॥

जब होंगे हम प्रभु अविकारी
बन जाय जगत तब फुलवारी
मम देह गेह स्नेह सभी ये
हो हर क्षण प्रभु मङ्गलकारी।

अभिमान उग्रता मर्दन कर, मन नर्तन मृदुल मयूर करें।
सद्गुण शुभ कर्म सम्पदा से, हे नाथ हमें भरपूर करें॥

---

२ प्रभु आदि पूर्व संवर्तन

ओम् हिरण्यगर्भः समवर्त्तताताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।
य।१३।४

सब सृष्टि प्रलय में वर्तमान, प्रभु आदि पूर्व से वर्तन।
जब किया आत्म धन अर्पण, तब हुआ नाथ का दर्शन॥

जब सृष्टि नहीं थी ये सारी
थी घोर प्रलय की अँधियारी
था एक हमारा स्वामी ही
कर रहा सृजन की तय्यारी।

पति एक अकेला ईश्वर, निज गर्भ लोक सब सर्जन।
जब किया आत्म धन अर्पण, तब हुआ नाथ का दर्शन॥

जग की रचना और धारणा
सर्व लोक की ललित लालिमा
पृथ्वी से की सूर्य लोक तक
है ईश सनातन पोष पालना।

जब प्रजा प्रजापति अपनी, हो सतत ज्योति आकर्षण।
जब किया आत्म धन अर्पण, तब हुआ नाथ का दर्शन॥

बन पर्वत सिन्धु नदी वसुधा
सब सूर्य चन्द्र जग की सुविधा
परमात्म सभी को देता है
जगजीवन की प्रियप्राण सुधा।

यह हव्य भव्य या गीत गव्य, सब किया आपको अर्पन।
जब किया आत्म धन अर्पण, तब हुआ नाथ का दर्शन॥

—०※०—

३ प्रभु की छाया

ओम् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिसं यस्य देवाः। यस्य च्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।
य। २५।१३

प्रभु की छाया से हट जाये, उस पर मृत्यु सदा मँडराये।
वह क्यों काया में भरमाये, प्रभु की छाया जो पा जाये॥

यह आत्म नाथ ने दी सबको
दिया ज्ञान भी उसका हमको
जीव-प्राण दाता बलदा ने
देदिया त्रिविध बल भी हमको।

तन-मन-इंद्रिय का बल पाये, इसका अनुशासन अपनाये।
वह क्यों काया में भरमाये, प्रभु की छाया जो पा जाये॥

विद्वान मूर्ख सब जड़ चेतन
बसें उसी के नियम निकेतन
जहाँ जीव उल्लंघन करते
हों दग्ध योनि में उनके तन।

जो नित्य नियम में ढल जाये, प्रभु साथ बैठ वह सुख पाये।
वह क्यों काया में भरमाये, प्रभु की छाया जो पा जाये॥

हों सत्य पिता के विश्वासी
कर प्रेम भक्ति हों सहवासी
रह सङ्ग परम सुखदायक के
हों मगन मोक्ष के अभिलाषी।

केवल माया में मँडराये, उससे छाया ही छुट जाये।
वह क्यों काया में भरमाये, प्रभु की छाया जो पा जाये॥

---

४ अति सूक्ष्म बृहत निर्माण

ओम् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशेऽअस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम। य।३२।३

सब छोड़ जगत के आडम्बर, आओ हम निश्छल भक्ति करें।
वह कैसा देव निराला है, आओ हम उसकी भक्ति करें॥

यह प्राणवान सब जीव जगत
या प्राण रहित जड़ मीत जगत
एक वही है राजा सबका
महिमा अनन्त उसकी अदभुत।

अपने पितु प्यारे राजा की, सन्तान प्रजा बन भक्ति करें।
वह कैसा देव निराला है, आओ हम उसकी भक्ति करें॥

प्राणी मानव दो पद वाले
सब पशु वर्ग चार पद वाले
प्रकृति जन्तु जीवाणु सभी के
सब उसने शरीर ये रच डाले।

अति सूक्ष्म बृहत निर्माता की, निर्माण शक्ति की भक्ति करें।
वह कैसा देव निराला है, आओ हम उसकी भक्ति करें॥

सुखस्वरूप वह देव हमारा
वही बढ़ाये विभव हमारा
जड़ चेतन या भौतिक तन
सभी उसी ने दिया हमारा।

अपनी उत्तम सामिग्री से, आओ विशेष हम भक्ति करें।
वह कैसा देव निराला है, आओ हम उसकी भक्ति करें॥

---

५ अन्तरिक्ष में लोक बसाये

ओम् येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्वः स्तभितं येन नाकः। योऽअन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम। य।३२।६

चलो भक्त भगवान लोक में, कर भ्रमण मगन मन भक्ति करें।
अपनी सारी शक्ति लगाकर, हम चलो पिता की भक्ति करें॥

अति उग्र सूर्य दृढ़ धरती को
सब अन्तरिक्ष की जगती को
धारण किया मधुर सुख जिसने
दुख रहित मोक्ष की मस्ती को।

यदि गोद मोक्ष की पानी है, तो परम पिता की भक्ति करें।
अपनी सारी शक्ति लगाकर, हम चलो पिता की भक्ति करें॥

अन्तरिक्ष में लोक बसाये
वायुयान सा जिन्हें उड़ाये
जैसे पक्षी उड़ें व्योम में
वैसे ही चंक्रमण कराये।

आनन्द लोक तक जाने को, सुख रूप ओ३म् की भक्ति करें।
अपनी सारी शक्ति लगाकर, हम चलो पिता की भक्ति करें॥

परमेश वही सुखदायक है
प्रभु वही कामना नायक है
जग निर्माता और नियन्ता
वह संचालक गतिदायक है।

यदि उड़ कर उस तक जाना है, तो हृदय लोक में भक्ति करें।
अपनी सारी शक्ति लगाकर, हम चलो पिता की भक्ति करें॥

---

६ प्रजापति प्यारे

ओम् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव: । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।
ऋ।१०।१२१।१०

हे परमेश प्रजापति प्यारे, मत करो हमारा तिरस्कार।
सर्वोपरि ओ३म् प्रजापति को, हो मान्य हमारा नमस्कार ॥

उत्पन्न जगत उत्थामी हो
सम्पूर्ण प्रजा के स्वामी हो
जो जगत सम्पदा ठुकराये
वह अन्य कौन उपनामी हो।

सब बसा अंक जो जड़ चेतन, कर सको तुम्हीं वह बहिष्कार।
सर्वोंपरि ओ३म् प्रजांपति को, हो मान्य हमारा नमस्कार ॥

जब तक कामना हमारी है
जग वस्तु वांछित सारी है
प्रभु करें पूर्ण वह अभिलाषा
जिसमें सुख स्वस्ति हमारी है।

पद प्रगति प्रतिष्ठा मिल जाये, सब यथायोग्य प्रिय पुरस्कार।
सर्वोपरि ओ३म् प्रजापति को, हो मान्य हमारा नमस्कार ॥

सब सिद्ध कामना हो जाये
ऐश्वर्य हमारा हो जाये
तुम अखिल विश्व के स्वामी हो
सेवक गृह स्वामी हो जाये।

सब सम्पति विपुल बल आए; लाये जीवन में परिष्कार।
सर्वोपरि ओ३म् प्रजापति को, हो मान्य हमारा नमस्कार ॥

---

७ बन्धु सहायक जनक पिता

ओम् स नो वन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त।
य। ३२। १०

सम्वन्ध ओ३म् से जोड़ लिया, अब ओ३म् नाम का जपना।
वह बन्धु सहायक जनक पिता, प्रभु ओ३म् विधाता अपना॥

वह भ्राता सा सहयोगी है
वह दुख नाशक उपयोगी है
दे जन्म पालना करता वह
प्रिय पिता जगत उद्योगी है।

हर यत्न सिद्धि का संरक्षक, परमेश विधाता अपना।
वह बन्धु सहायक जनक पिता, प्रभु ओ३म् विधाता अपना॥

धरणी धाम लोक लोकान्तर
सब ज्ञात जीव के अभ्यन्तर
स्थूल एक जग जीव दूसरा
बस रहा तीसरे प्रभु अन्दर।

विद्वान ज्ञान से शुद्ध बने, हो ओ३म् धाम में बसना।
वह बन्धु सहायक जनक पिता. प्रभु ओ३म् विधाता अपना॥

जग बाधाओं के तोड़ बन्ध
पा ओ३म् धाम आनन्द कन्द
विद्वान सरल हों मोक्ष मगन
वे प्राप्त करें सुख स्वच्छन्द।

अमरत्व मोक्ष पा रोम रोम, अब हमें ओ३म् में रमना।
वह बन्धु सहायक जनक पिता, प्रभु ओ३म् विधाता अपना॥

---

८ धर्म मार्ग से आये

ओम् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमः उक्ति विधेम। य।४०।१६

विज्ञान मिले धन राज्य मिले, शासन सत्ता भी मिल जाये।
ऐश्वर्य हमारे घर आये, पर धर्म मार्ग से वह आये॥

प्रभु अग्नि तुम्हारा यह प्रकाश
दे ज्ञान तुम्हारा यह प्रकाश
हे अग्नि जहाँ छा जाते हो
हो वहीं तुम्हारा यह प्रकाश।

विद्वान तुम्हीं प्रभु मन भायें, हमको भी आयें विद्यायें।
ऐश्वर्य हमारे घर आये, पर धर्म मार्ग से वह आये॥

विज्ञान राज्य तब आयेगा
जब ज्ञान कर्म ढल जायेगा
आप्त जनों का उत्तम सुपन्थ
जो धर्म युक्त अपनायेगा।

जो सुपथ सत्पुरुष सा पाये, धनवान धन्य वह बन जाये।
ऐश्वर्य हमारे घर आये, पर धर्म मार्ग से वह आये॥

कटु कुटिल पाप के कर्म सभी
अन्तर अन्याय अधर्म सभी
ये नाथ हमारे दूर करें
दे धर्म कर्म के मर्म सभी।

नित विनत भावना मन लाये, प्रभु गीत प्रशंसा के गायें।
ऐश्वर्य हमारे घर आये, पर धर्म मार्ग से वह आये॥

चतुर्थ रश्मि

देवदूत गीत माला

आचमन मन्त्र :- १ स्वाहा सुख की भाषा

ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥१॥
ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥२॥
ओ३म् सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा ॥३॥

दे वाह वाह उत्साह स्वाह, मिट जाय आह यह आशा है।
स्वर गूंज उठे स्वाहा स्वाहा, यह स्वाहा सुख की भाषा है॥

यह ओढ़ लिया प्रभु उपस्तरण
शाल दुशाला अमृत आवरण
सन्ताप देह का मिट जाये
जल का पा अभिषेक संवरण।

ऊपर चादर चढ़ी ओ३म् की, कुछ नीचे भी प्रत्याशा है।
स्वर गूंज उठे स्वाहा स्वाहा, यह स्वाहा सुख की भाषा है॥

नीचे भी हो ओ३म् विस्तरण
भू-शीत-ताप से हो रक्षण
बाहर ओ३म् ओ३म् भीतर हो
तभी यज्ञ का बने संवरण।

ओ३म् बिछौना ओ३म् उठौना, दे ओ३म् शांति अभिलाषा है।
स्वर गूंज उठे स्वाहा स्वाहा, यह स्वाहा सुख की भाषा है॥

सब ओर ओ३म् का हुआ बरण
हुआ सत्य शिव सौम्य आचरण
कीर्ति कामिनी आ मुस्काई
कान्ति श्री ने किया पदार्पण।

श्रेय पार कर श्रेय मिला ये, श्रेय मुक्ति की परिभाषा है।
स्वर गूंज उठे स्वाहा स्वाहा, यह स्वाहा सुख की भाषा है॥

अङ्ग-स्पर्श- २ अङ्ग अङ्ग पा प्रभु उमङ्ग

१ ओम् वाङ्म आस्येऽस्तु । २ ओम् नसोर्में प्राणोऽस्तु ।
३ ओम् अक्ष्णोर्में चक्षुरस्तु । ४ ओम् कर्णयोर्में श्रोत्रमस्तु ।
५ ओम् बाह्वोर्में बलमस्तु । ६ ओम् ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ।
७ ओम् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ।७।

तन अंग अंग पा प्रभु उमंग, सब कर्मशील बन जायें ।
हे शक्ति निधे दो शक्ति हमें, हम धर्मशील बन जायें ॥

मुख में बल रसना वाणी हो
नासिका प्राणमय प्राणी हो
हो चक्षु दृष्टि की शक्ति लिए
बल श्रवण कर्ण कल्याणी हो ।

पुरुषार्थ प्रबल हो बाहों में, जय यज्ञशील बन जायें ।
हे शक्ति निधे दो शक्ति हमें, हम धर्मशील बन जायें ॥

ये जङ्घायें हों ओज पूर्ण
बल गमन आगमन स्रोत पूर्ण
यह अंग अंग की बात नहीं
ये सबल स्वस्थ हो देह पूर्ण ।

पा सबल देह में सबल बुद्धि, कर्तव्य शील बन जायें ।
हे शक्ति निधे दो शक्ति हमें, हम धर्मशील बन जायें ॥

देह आत्म सब हृदय सबल हों
अनुशासित मनु का संबल हो
बाहर बल हो भीतर बल हो
बल ही बल हो किंतु विमल हो ।

यह देह आत्म मन मन्दिर पा, हम कर्मशील बन जायें ।
हे शक्ति निधे दो शक्ति हमें, हम धर्मशील बन जायें ।

—०❋०—

३ जाग उठो हे अग्निदेव

ओम् भूर्भुवः स्वः। दीपक जलाइये।

अग्न्याधान– कपूर द्वारा शलाखा से अग्नि उत्पन्न कीजिये

ओम् भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ॥ य।३।५

ओ३म् प्राण प्रिय कष्ट विमोचक, हे सुखदायक रक्षक आओ
अब जाग उठो हे अग्नि देव, इस यज्ञ पीठ पर आ जाओ।

तुम पृथ्वी में हो अग्नि रूप
अन्तरिक्ष में विद्युत स्वरूप
हर कहीं तुम्हारा तेज व्याप्त,
द्यौ लोक सूर्य का लिए रूप।

द्यौ लोक दिव्य भू लोक श्रेष्ठ, इस वेदि मनोरम पर आओ
अब जाग उठो हे अग्नि देव, इस यज्ञ पीठ पर आ जाओ।

तुम पीठासीन यहाँ होगे
अन्नादि हव्य मृदु खाओगे,
यह द्रव्य हव्य कर सूक्ष्म भत्य
तुम दूर—दूर फैलाओगे।

तुम खाओ ओर बढ़ाओ हवि, पोषण सुगन्धि जग विखराओ।
अब जाग उठो हे अग्नि देव, इस यज्ञ पीठ पर आ जाओ।

हे अग्नि भा संकेतक हो
ईश्वर के रूप प्रचेतक हो
अब किया यहां स्थापित तुमको
प्रभु तुम्हीं प्रकाश सचेतक हो।

मम आत्म हृदय के सहवासी, इस यज्ञ कुण्ड में बस जाओ।
अब जाग उठो हे अग्नि देव, इस यज्ञ पीठ पर आ जाओ॥

---

४ देदीप्यमान कर दो

अग्नि प्रदीपन—घी और छोटी समिधाओं से अग्नि प्रदीप्त कीजिये

ओम् उदबुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्तेसᳫंसृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत। य।१५।५४

आ यज्ञ कुण्ड में अग्निदेव, हमको देदीप्यमान कर दो।
हे अग्नि प्रदीप्त प्रकाशित हो, यह आत्म उदीयमान करदो॥

ओ३म् आपकी अनुकम्पा से
यह अग्नि प्रज्वलित हो जाये
यह हविर्यज्ञ जग सोम यज्ञ
सम्पूर्ति इसी से हो जाये।

दया धर्म उपकार कर्म को, प्रियवर प्रेरणा दान करदो।
हे अग्नि प्रदीप्त प्रकाशित हो, यह आत्म उदीयमान करदो॥

सभी उपस्थित आमन्त्रित जन
आसीन वेदि पर हो जाओ,
विद्वान देवजन सन्दर्शी
सन्मार्ग यज्ञ का दिखलाओ।

इस यज्ञ मिलन के साथ साथ, मन भी सप्रीतिवान कर दो।
हे अग्नि प्रदीप्त प्रकाशित हो, यह आत्म उदीयमान करदो॥

जो बैठ वेदि पर यज्ञ किया
वह वेदि बाद भी ध्यान रहे,
हम उठकर कहीं चले जायें
पर जग में कर्म महान रहे।

जो किया यहां वह अग्नि यज्ञ, जग में शोभायमान कर दो।
हे अग्नि प्रदीप्त प्रकाशित करो, यह आत्म उदीयमान करदो॥

---

५ स्वयँ दीप्त हमको दमकाता

समिधादान– एक समिधाहुति घी सहित (१)

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम। आश्व १।१०।१२

समिधा पाकर यह यज्ञ अग्नि, बढ़कर ऊपर उठ जाता है।
यह अग्नि जगत में हो प्रयोग, जीवन सम्पन्न बनाता है।।

जो अग्नि यज्ञ में आई है
जीवन में वही समाई है,
निर्माण यही जग में करती
इस ने हीं आय बढ़ाई है।

धन धान्य प्रजा पशु तेज कीर्ति, इन सबका अग्नि प्रदाता है।
यह अग्नि जगत में हो प्रयोग, जीवन सम्पन्न बनाता है।।

यह काष्ठ अग्नि का है शरीर
पा काष्ठ बढ़े यह अग्नि धीर,
मिल जाए अग्नि इस भाँति हमें
जिस भाँति बने प्रभु हम अमीर।

समिधा की आहुति पाकर के, अति तीव्र अग्नि हो जाता है।
यह अग्नि जगत में हो प्रयोग, जीवन सम्पन्न बनाता है।।

स्वयँ दीप्त हमें दमकाता
जग में अग्नि प्रकाश लुटाता,
जातवेद इस अग्नि वृद्धि हित
मैं आहुति हूं आज चढ़ाता।

यह मेरा क्या सब तेरा है, तेरा तुझ को मिल जाता है।
यह अग्नि जगत में हो प्रयोग, जीवन सम्पन्न बनाता है।।

–:*★*:–

६ हे अग्नि अतिथि

समिधादान— घी सहित दूसरी समिधाहुति (२)

ओम् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयथातिथिम । आस्मिन्हव्या जुहोतन स्वाहा । इदमग्नये इदन्न मम । य।३।१

ओम् सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन । अग्नये जातवेदसे स्वाहा । इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम । य।३।२

हे अग्नि रूप प्रिय अग्नि मान्य, इस घृत समिधा का पान करो।
हे अग्नि अतिथि बनकर आओ, अन्नादि हव्य का पान करो॥

यह यज्ञ कुण्ड में की स्थापित
समिधा पाकर हुई प्रज्वलित,
घृत खाकर तो ज्वाल बन गई
अग्नि हो उठी तीव्र प्रकाशित।

अन्नादि द्रव्य तब खाती है, यजमान हव्य का दान करो।
हे अग्नि अतिथि बनकर आओ, अन्नादि हव्य का पान करो॥

प्रकट अग्नि जो हुई प्रज्वलित
प्राप्त तीव्रघृत हुई प्रकाशित,
हो ओ३म् हमारा ग्रहण होम
कर दो जीवन धारा शोधित।

हे अतिथि अग्नि दो बोध हमें, जीवन में जागृत ज्ञान करो।
हे अतिथि अग्नि बनकर आओ, अन्नादि हव्य का पान करो॥

द्रव्य तुम्हारा – नहीं हमारा
तुम्हें समर्पित हव्य तुम्हारा,
भाग्य हमारा ज्ञात तुम्हें है
प्रभुवर दो सम्बोध सहारा।

सत्कार पूर्ण घृत समिधा का, हे अतिथि अग्नि परिधान करो।
हे अग्नि अतिथि बनकर आओ, अन्नादि हव्य का पान करो॥

—•※•—

७ व्याप्त अंगिरा

समिधादान– घी सहित तीसरी समिधाहुति (३)

ओम् तन्त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन बर्धयामसि बृहच्छोचाय-
विण्ठम् स्वाहा। इदमग्नयेऽङ्गिरषे इदन्न मम। य।३।१।२३।

हर वस्तु वस्तुयें व्याप्त अंगिरा, घृत से मैं तुम्हें बढ़ाता हूं।
घृत समिधा की आहुति देकर, मैं गीत तुम्हारे गाता हूँ।

अङ्गिरा अग्नि घृत समिधा
प्रत्येक बस्तु में व्यापक है,
घृत समिधा की इस आहुति से
तुम बढ़ते बहुत प्रकाशक हो।

अङ्गिरा ग्रहण यह आहुति हो, श्रद्धा से तुम्हें चढ़ाता हूं
घृत समिधा की आहुति देकर, मैं गीत तुम्हारे गाता हूँ॥

बस रहे सकल साकेत तुम्हीं
कर रहे सत्य संकेत तुम्हीं,
पहिचान वस्तुओं की होती
देते विश्लेषण भी तुम ही

देता घृत समिधा ज्यों ज्यों मैं, त्यों त्यों प्रकाश मैं पाता हूँ।
घृत समिधा की आहुति देकर, मैं गीत तुम्हारे गाता हूं॥

क्या अपनी थी संपदा कभी
वस्तु अंगिरा की सभी सभीं
यह उसकी समिधा उसको दी
मिल गई कृपा प्रभु अभी अभी।

यह ज्योति अंगिरा की पाकर, मैं नत मस्तक हो जाता हूं।
घृत समिधा की आहुति देकर, मैं गीत तुम्हारे गाता हूँ॥

८ आत्म अग्नि का सुन्दर घृत

पञ्च घृताहुति—इस मन्त्र को पाँच बार बोलकर घी की आहुति दीजिए।

ओम् अयन्त इध्म आत्मा जातवेधस्तेनेध्यस्व व वर्धस्चेद्ध-वर्धय। चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम। आश्व १।१०।१२

घृत की आहुतियों से जैसे, पा ओज अग्नि यह बढ़ती है।
वह ओजनाथ मिल जाय हमें, अब यही हमारी विनती है॥
जो अग्नि यज्ञ में आई है
जीवन में वही समाई है,
निर्माण यही जग में करती
इसने ही आय बढ़ाई है।
धन धान्य प्रजा पशु तेज कीर्ति, ये सभी अग्नि ही बरती है।
वह ओज नाथ मिल जाय हमें, अब यहीं हमारी विनती है॥
आत्म अग्नि का सुन्दर घृत है
जग ज्योति इसी से जागृति है
इससे ही ज्वाला बढ़ती है
जो देती ऐश्वर्य अमृत है।
जातवेद के ओज तेज से, सब सुदृढ़ ज्ञान गौ बनती है।
वह ओज नाथ मिल जाय हमें, अब यही हमारी विनती है॥
स्वयँ दीप्त हमको दमकाता
ज्ञानेन्द्रियों को ओज दिलाता
करलो स्वीकार घृताहुतियां
हे अग्नि ज्ञान के विख्याता।
इस अग्नि ओज आयोजन से, इन्द्रियाँ प्रखर हो सकती हैं।
वह ओज नाथ मिल जाय हमें, अब यही हमारी विनती है॥

---

६ अनुकूल बहे जल

जलाञ्जलि– ओम् अदितेऽनुमन्यस्व । जल से वेदी के पूरब की अ
ओम् अनुमतेऽनुमन्यस्व । इससे पश्चिम की ओ
ओम् सरस्वत्यनुमन्यस्व । इससे उत्तर की ओर
गोभिल अ० प्र० १ खं० ३ सू० १ से ३

यह अग्नि अनुकूल बहे जल, हो जाय कहीं प्रतिकूल नहीं ।
अनुकूल हमारे हो जाये, हो जाय यज्ञ प्रतिकूल नहीं ।।
पहले ही आदित्य जनों से
हमने विधि आज्ञा अनुमति ली
पीछे यह यज्ञ किया वैसे
परिपालन उनकी अनुमति दी
हो बाद सरस्वती की संगति, तब होती कोई भूल नहीं ।
अनुकूल हमारे हो जाये, हो जाय यज्ञ प्रतिकूल नहीं ।।
अनुकरण पूर्व का पश्चिम में
तब उत्तर में कल आता है,
आगे प्रकाश पीछे पालन
उपरान्त यज्ञ खिल जाता है ।
विधि क्रम में यदि भ्रम हो जाये, तो मिले यज्ञ का मूल नहीं ।
अनुकूल हमारे हो जाये, हो जाय यज्ञ प्रतिकूल नहीं ।।
प्रति अदिति देव की दृढ़ अनुगति
गतिशील सरस्वती करती है
इस जल से यज्ञ सुरक्षा है
जल से ही जीवित जगती है
विषनाशक है यश साधक है, जल सिंचन से हो शूल नहीं ।
अनुकूल हमारे हो जाये, हो जाय यज्ञ प्रतिकूल नहीं ।।

---

१० दिव्य गुणों का उत्तम जल

जलाञ्जलि— इस मन्त्र में वेदी के चारों ओर

ओम् देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्न पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु। य।३०।१

प्रभु करो यज्ञ उत्प्रेरित यह, उत्साहवान यजमान करो।
प्रभु यज्ञ सुरक्षा के द्वारा, इस याज्ञिक का उत्थान करो॥

यह दिव्य गुणों का उत्तम जल
सबका प्रेरक उत्पादक है,
यही यज्ञ को प्रेरित करता
इससे ही प्रेरित साधक है।

जल सृजन करे ऐश्वर्य वरे, वैसे याज्ञिक निर्माण करो।
प्रभु यज्ञ सुरक्षा के द्वारा, इस याज्ञिक का उत्थान करो॥

यही धरा को धारण करता
हर ओर भूमि के वहता है,
यही देह को धारण करता
पावन शरीर जल करता है।

अव सभी ओर आ जाओ जल, यजमान शुद्ध पवमान करो।
प्रभु यज्ञ सुरक्षा के द्वारा, इस याज्ञिक का उत्थान करो॥

यह जल प्रतीक परमेश्वर का
रस वाणी का यह स्वामी है,
माधुर्य समाये वाणी में
हो इसका जो अनुगामी है।

चारों ओर जलांजलि पाकर, प्रभु सफल यज्ञ-यजमान करो।
प्रभु यज्ञ सुरक्षा के द्वारा, इस याज्ञिक का उत्थान करो॥

---

११ अग्नि बनाती ऊर्जा

आघारावाज्याहुति–

ओम् अग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम। घृताहुति उत्तर में

ओम् सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदन्न मम। घृताहुति दक्षिण में

आज्याभागाहुति– घृताहुति मध्य में

ओम् प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदन्न मम।

ओम् इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय इदन्न मम।

हम अग्नि सोम प्रजापति इन्द्र, सबको घृत आहुति देते हैं।
ये तेरी देन नहीं मेरी, तेरी ही तुझको देते हैं।।

हे भौतिक अग्नि उठो ऊपर
निज तेज बिखेरो अब भू पर
बन जाय सोम यह घृत आहुति
प्रिय चन्द्र किरण को क्षण छूकर।

प्रत्यक्ष अग्नि को यह आहुति, ये सोम चन्द्र को देते है।
ये तेरी देन नहीं मेरी, तेरी ही तुझको देते हैं।।

अग्नि बनाती आहुति ऊर्जा
हो चन्द्र किरण छू सोम सृजा
निर्माण शक्ति बनकर लौटे
पाये भू पर वो पोष प्रजा।

परमेश प्रजापति को आहुति, जग प्रजानन्द हित देते हैं।
ये तेरी देन, नहीं मेरी, तेरी ही तुझको देते हैं।।

मिल जाय इन्द्र से शक्ति हमें
जग जीवन में अभिव्यक्ति हमें
सब सूर्य रूप विद्युत स्वरूप
मिल जाय अग्नि की युक्ति हमें।

ऐश्वर्य कामना से आहुति, ये इन्द्र तुम्हें हम देते हैं।
ये तेरी देन, नहीं मेरी, तेरी ही तुझको देते हैं।।

१२ प्रभु से सूर्य, सूर्य से जग में

प्रभात आहुतियाँ— घी सामिग्री सहित

ओम् सूर्यो ज्योति ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ।१।
ओम् सूर्यो वर्चो ज्योतिवर्चः स्वाहा ।२।
ओम् ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ।३।
ओम् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या जुषाणः सूर्योवेतु स्वाहा ।

प्रभु से सूर्य,सूर्य से जग में, पा आत्म ज्योति विस्तार करो।
हे ईश्वर सूर्य कृपा करके, यह आहुति अंगीकार करो ।।

ज्यों ज्योति सूर्य की दीपक में
त्यों ज्योति सूर्य में ईश्वर की
दीपक में सूर्य सूर्य में हो
छवि रम्य दर्श जगदीश्वर की ।

यह ज्योति सूर्य वह सूर्य ज्योति, दे सूर्य प्रभा उपकार करो ।
हे ईश्वर सूर्य कृपा करके, यह आहुति अंगीकार करो ।।

बर्चस्व सूर्य में प्रभु का है
दीप ज्योति में वही बर्च है,
अन्तरयामी के प्रकाश में
जगत व्याप्त उत्कर्ष अर्च में ।

सूर्य लोक से जीव जगत तक, सतत समन्वय श्रृंगार करो ।
हे ईश्वर सूर्य कृपा करके, यह आहुति अंगीकार करो ।।

वही सूर्य है प्रेरक सबका
करे नतत निद्रा अँधियारी
ले साथ उषा प्रिय इन्द्रवती
दे आत्म बोध की उजियारी ।

विद्यादि सद्गुणों को वर कर, अपनी आहुति स्वीकार करो ।
हे ईश्वर सूर्य कृपा करके, यह आहुति अंगीकार करो ।।

---

१३ निशि अग्नि ज्योति

सायं आहुतियां– घी सामिग्री सहित

ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।१।
ओम् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।२।
ओम् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ।३। (मौन आहुति)
ओम् सजूर्देवेन सविता सजूरात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा ।

सूर्य दिवस में करता जैसे, निशि अग्नि ज्योति विस्तार करो ।
हे ईश्वर अग्नि कृपा करके, यह आहुति अङ्गीकार करो ।।

दीपक में ज्योति अग्नि की है
ज्योति अग्नि में परमेश्वर की,
यह दीप रात्रि में जल करके
दिखलाता छवि सर्वेश्वर की ।

यह अग्नि ज्योति वह ज्योति अग्नि, दे अग्नि प्रभा उपकार करो ।
हे ईश्वर अग्नि कृपा करके, यह आहुति अङ्गीकार करो ।।

वर्चस्व अग्नि में ईश्वर का
दीप ज्योति में वही वर्च है,
अन्तर्यामी के प्रकाश में
रात्रि व्याप्त उत्कर्ष अर्च है ।

प्रभा लोक से जड़ चेतन तक, निशा समन्वय श्रृंगार करो ।
हे ईश्वर अग्नि कृपा करके, यह आहुति अङ्गीकार करो ।।

प्रेरक सबका यही अग्नि है
हो अभय निशा की अँधियारी
इस इन्द्रवती प्रिय निशा मध्य
हो आत्म ज्ञान की उजियारी ।

विद्युत प्रकाश जगमग देकर, ये आहुति प्रभु स्वीकार करो ।
हे ईश्वर अग्नि कृपा करके, यह आहुति अङ्गीकार करो ।।

---

१४ शुद्ध लोक लोकान्तर कर

प्रातः सायँ आहुतियां— घृत आहुतियाँ

ओम् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम।
ओम् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम।
ओम् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा।इदमादित्याय व्यानायइदन्नमम
ओम् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्य स्वाहा।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः इदन्न मम।

ब्रह्माण्ड भूमि ये अन्तरिक्ष, द्यौ लोक हव्य विस्तार करो।
सब शुद्ध लोक लोकान्तर कर, यह आहुति अंगीकार करो॥

भू अग्नि वायु अन्तरिक्ष में
द्यौ में आदित्य शुद्ध करदो,
शारीरिक प्राण अपान व्यान
लो आहुति ईश शुद्ध करदो।

ब्रह्माण्ड पिण्ड इन दोनों में, प्रिय शुद्ध शक्ति संचार करो।
सब शुद्ध लोक लोकान्तर कर, यह आहुति अंगीकार करो॥

प्रभु अग्नि प्राण को करे सबल
प्रिय प्राणों से तन रक्षा है,
वायु शक्ति देती अपान को
जो कष्ट निवारण दक्षा है।

आदित्य व्यान बल सुखदायक, हे सर्व शक्ति उपकार करो।
सब शुद्ध लोक लोकान्तर कर, यह आहुति अंगीकार करो॥

अग्नि प्राणवत वायु कष्ट हर
आदित्य खींच रस सुख देता,
ये नही संग्रह रखते हैं
सब धरती पर वर्षा देता।

दे अग्नि वायु आदित्य शक्ति, अपनी आहुति स्वीकार करो।
सब शुद्ध लोक लोकान्तर कर, यह आहुति अंगीकार करो॥

---

१५ आप ज्योति रस अमृत ब्रह्म

घी सामिग्री सहित

उभय कालीन आहुतियां:- (१)

ओम् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा।

हे नाथ आपने रचना की, अब इसे आप स्वीकार करो।
इस यज्ञ यज्ञमय जीवन की यह आहुति अंगीकार करो॥
जल आप शान्तिदायक व्यापक
प्रभु ज्योति जगत के हो प्रकाश
आनन्द रसी सुख रस देते
हो अविनाशी प्रिय अमृत आश।
हो सबसे ब्रह्म महान आप, हम सबका अब उत्थान करो।
इस यज्ञ यज्ञमय जीवन की, यह आहुति अंगीकार करो॥
प्राणों से प्यारे रक्षक हो
दु:खहर्ता प्रभु संरक्षक हो,
आनन्द रूप सुच देते हो
है ओ३म् आप प्रतिरक्षक हो।
जो सुख से कहकर स्वाहा दो,यह आहुति निज अधिकार करो।
इस यज्ञ यज्ञमय जीवन की, यह आहुति अंगीकार करो॥
आदेश ओ३म् का अपनाया
तब हमने यह यज्ञ रचाया
प्रभु अपने साथ जगत का भी
इसमें आ उपकार समाया।
हे आप ज्योति रस अमृत ब्रह्म, आशीष उदय उजियार करो।
इस यज्ञ यज्ञमय जीवन की, यह आहुति अंगीकार करो॥

—०※०—

१६ यह मेधा मृदु विज्ञानमयी

(२)

ओम् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।

पितर हमारे रहे सेवते, हम क्यों वंचित रह जायें।
बुद्धि मनीषा मेधा प्रज्ञा, क्यों नहीं नाथ हम पायें॥

की उपासना पितर जनों ने
अपनाई जो देव जनों ने,
यह मेधा मृदु विज्ञानमयी
प्रभु से पाई श्रेष्ठ जनों ने।

प्रिय पितर चाहते रहे जिसे वह शुद्ध बुद्धि हम पायें।
बुद्धि मनीषा मेधा प्रजा, क्यों नहीं नाथ हम पायें॥

सत्य धारणा जिससे होती
बुद्धि प्रखर वह मेधा होती,
जो इसे प्राप्त कर लेते हैं
उनकी कीर्ति गुंजरित होती।

पाकर महाजनों सी मेधा, पुण्य पुरोधा वन जायें।
बुद्धि मनीषा मेधा प्रज्ञा, क्यों नहीं नाथ हम पायें॥

मत अधिक समय दो संभावी
देन आज हो अभी प्रभावी
स्वीकार कथन हो स्वाहा का
प्रभु कृपा बनें हम मेधावी।

प्रभु प्रीति पितर जन पाई जो, वह प्रीति हमें मिल जायें।
बुद्धि मनीषा मेधा प्रज्ञा, क्यों नहीं नाथ हम पायें॥

नोट– आगे तीन आहुतियाँ पृष्ठ ४८, ५४ और ३१ पर देखिए

१७ प्रायश्चित

स्विष्टकृति एवं प्रजापति आहुतियाँ–

ओम् यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम् । अग्निष्ट-स्विष्टकृद्विद्यात्सर्वंन् स्विष्टं सुहुतं करोतु मे । अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वं प्रायश्चित्ता हुतीनां कामानां समर्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्धय स्वाहा । इदमग्नये-स्विष्टकृते इदन्न मम ।

ओम् प्रजापतये स्वाहा । मौन आहुति इदं प्रजापतये इदन्न मम।

यह यज्ञ कर्म जो किया यहां, विधि न्यूनाधिक हो सकता है।
त्रुटि का हो जाता परिष्कार, जग प्रायश्चित जो करता है॥

कुछ न्यून हुआ या अधिक किया
पर जान बूझकर नहीं किया,
उचित यजन उत्तम आहुति से
तुम समझो हमने हवन किया।

हो कर उदार दो कर सुधार, यजमान विनय यह करता है।
त्रुटि का हो जाता परिष्कार, जग प्रायश्चित जो करता है॥

हो अनजाने में भूल भ्रमित
पश्चाताप किया प्रायश्चित
कामना पूर्ति कर्ता प्रभु को
यह स्वस्ति हेतु आहुति अर्पित।

हे नाथ कामना पूर्ण करो, यजमान शरण में पड़ता है।
त्रुटि का हो जाता परिष्कार, जग प्रायश्चित जो करता है।

जगदीश प्रजापति निर्माता
ब्रह्माण्ड पिण्ड के उदराता,
यह आहुति अंगीकृत करके
शुभ कार्य सफलता दो त्राता।

अनुकूल प्रजापति हो जायें, यजमान नमन नित करता है।
त्रुटि का हो जाता परिष्कार, जग प्रायश्चित जो करता है॥

---

१८ कर कृपा यज्ञ यह पूर्ण किया

पूर्णाहुति–

ओ३म् सर्वं वै पूर्णꣳस्वाहा । तीन बार बोलिए

तुमको परमेश्वर धन्यवाद, कर कृपा यज्ञ यह पूर्ण किया ।
प्रभु पूर्ण किया प्रिय पूर्ण किया, यह यज्ञ आपने पूर्ण किया ।।

हम भली भाँति यह जान रहे
प्रभु ने यह जगत बनाया है,
परिपूर्ण व्याप्त सर्वेश्वर ने
निज महिमा से विकसाया है ।

रह गई न्यूनता कहीं नही, निर्माण सतत सम्पूर्ण किया ।
प्रभु पूर्ण किया प्रिय पूर्ण किया, यह यज्ञ आपने पूर्ण किया ।

प्रभु स्वयँ पूर्ण सो जगत पूर्ण
कुछ नहीं अधूरा छोड़ा है,
जगत चराचर के स्वामी से
हमनें भी नाता जोड़ा है ।

मन–बचन–कर्म से समरथ हो, यह यज्ञ कर्म परिपूर्ण किया ।
प्रभु पूर्ण किया प्रिय पूर्ण किया, यह यज्ञ आपने पूर्ण किया ।।

यों बोल बोलकर तीन बार
भर लिया हृदय त्रिवाचा है,
आशीष आपका पाकर ही
यह यज्ञ रचाया सांचा है ।

ज्यों यज्ञ अग्नि हो रही शांत, त्यों अहंकार हम चूर्ण किया ।
प्रभु पूर्ण किया प्रिय पूर्ण किया, यह यज्ञ आपने पूर्ण किया ।।

पञ्चम रश्मि

पावमानी गीत माला

१ आयुष्य पुनीत

आज्याहुतियाँ केवल चार घी की आहुतियाँ (१)

ओ३म् भूर्भवः स्वः । अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च न
आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम।

ओ३म् प्राण प्रिय दुःख विमोचक, हे सुखदायक उत्थान करो
करो हमारा जीवन पावन, हे ओ३म् सदा कल्याण करो

आयुष्य पुनीत देव करते
वे शुद्ध जगत जीवन करते,
बल भली भांति प्रभु हमको दो
प्रभु यही प्रार्थना हम करते ।

देकर अन्नादि योग्य वैभव, हे देव हमें बलवान करो
करो हमारा जीवन पावन, हे ओ३म् सदा कल्याण करो

बाहर आये जो बाधायें
उन पर आरी ही चल जाये
बढ़ गये द्वेष कुविचारों को
अन्तर्मन से नाथ हटायें।

इसीलिये यह आहुति अर्पण, यह जीवन स्वच्छ महान करो
करो हमारा जीवन पावन, हे ओ३म् सदा कल्याण करो

हव्य तुम्हारा नहीं हमारा
तुम्हें समर्पित हव्य तुम्हारा,
तुम्हें पता हर आवश्यकता
वही हमें दो भोग्य हमारा।

हटे बुराई अच्छाई हो, प्रभु यथा योग्य अनुदान करो
करो हमारा जीवन पावन, हे ओ३म् सदा कल्याण करो

---

२ पवित्र पाँचजन्य

(२)

ओं भूर्भुवः स्वः। अग्निऋषिः पवमानः पाँचजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयं स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम।

ओ३म् प्राण प्रिय दुख विमोचक, हे सुखदायक उत्थान करो।
करो हमारा जीवन पावन, हे ओ३म् सदा कल्याण करो॥

जैसे अग्नि प्रकाशन करता
पलपल पन्थ प्रदर्शन करता,
अपने तेज ताप के द्वारा
तीक्ष्ण वस्तु तक पावन करता।

वैसे ही प्रभु प्रभा ज्ञान दो, जीवन पवित्र पवमान करो।
करो हमारा जीवन पावन, हे ओ३म् सदा कल्याण करो॥

नहीं अकेले पचजनों का
चार वर्ण के आर्य जनों का,
उनका भी हों जीवन पावन
बचे पांचवे म्लेच्छ जनों का।

एक अकेले से क्या होगा, प्रभु सबको ही सुखदान करो।
करो हमारा जीवन पावन, हे ओ३म् सदा कल्याण करो॥

सृष्टि पूर्व से तुम्हीं पुरोहित
ले चले आ रहे सबका हित
यह गायक मिल गया आज जो
लेकर आहुति दो सुभग सुहित।

महा गान यह हमने गाया, प्रभु सफल सकल गुणगान करो।
करो हमारा जीवन पावन, हे ओ३म् सदा कल्याण करो॥

---

३ सन्तोष-पोष दो कोष

(३)

ओं भूर्भुवः स्वः । अग्ने पवस्वस्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् । दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा । इदमग्नये पवमानाय इदन्न मम ।

ऋ ९।६६।१९ से २१ तक

प्रभु ओम् प्राणप्रिय दुःख विमोचक हे सुखदायक उत्थान करो।
करो हमारा जीवन पावन, हे ओम् सदा कल्याण करो।

बस पुत्र वही होगा पवित्र
जिसका उत्तम आचरण मित्र,
वर्चस्व वीर्य दो तेज उसे
हो जाये प्रजा सब सच्चरित्र

ऐश्वर्य विपुल देकर पवित्र, हे देव हमें धनवान करो।
करो हमारा जीवन पावन, हे ओ३म् सदा कल्याण करो ॥

इस ओर कृपा की दृष्टि करो
प्रभु धन वैभव की वृष्टि करो,
यह जाये मत ऐश्वर्य व्यर्थ
इससे ही मेरी पुष्टि करो।

सन्तोष पोष दो कोष हमें, जीवन परिपुष्ट महान करो।
करो हमारा जीवन पावन, हे ओ३म् सदा कल्याण करो ॥

अपना उत्तम यह सदाचरण
करे सुपावन जीवन क्षण-क्षण
जग तेज पराक्रम धन आये
हो जीव जागरण से पोषण।

इसलिये समर्पित यह आहुति, इस जीवन को गतिमान करो।
करो हमारा जीवन पावन, हे ओ३म् सदा कल्याण करो ॥

---

४ सम्पूर्ण प्रजा के स्वामी

(७४)

ओं भूर्भुवः स्व । प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं श्याम पतयो रयीणां स्वाहा । इदं प्रजापतये इदन्न मम । ऋ।१०।१२१।१०

ओ३म् प्राण प्रिय दुःख विमोचक, हे सुखदायक उत्थान करो।
करो हमारा जीवन पावन, हे ओ३म् सदा कल्याण करो ॥

उत्पन्न जगत उत्थामी हो
सम्पूर्ण प्रजा के स्वामी हो,
जो जगत सम्पदा ठुकराये
वह अन्य कौन उपनामी है।

सब बसा अङ्क जो जड़ चेतन, कुछ वही हमें अनुदान करो।
करो हमारा जीवन पावन, हे ओ३म् सदा कल्याण करो ॥

जब तक कामना हमारी है
जग वस्तु वांछित सारी है
प्रभु पूर्ण करें वे अभिलाषा
जिनमें सुख स्वस्ति हमारी है।

पद प्रगति प्रतिष्ठा मिल जाये, शुभ अलंकरण परिधान करो।
करो हमारा जीवन पावन, हे ओ३म् सदा कल्याण करो ॥

यह सिद्ध साधना हो जाये
ऐश्वर्य हमारा हो जाये,
तुम अखिल विश्व के स्वामी हो
सेवक गृह स्वामी हो जाये।

शुभ सम्पदा विपुल बल आये, पर हमको आहुतिवान करो।
करो हमारा जीवन पावन, हे ओ३म् सदा कल्याण करो ॥

—०✽०—

५ वरणीय ओ३म अनुपम

अष्टाज्याहुतियाँ घी सामिग्री सहित (१)

ओं त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान देवस्य हेडोऽव यासिसीष्ठा यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा इदमग्निवरुणाभ्याम् इदन्न मम। ऋ ४।१।४

प्रिय दिव्य गुणों के उत्तम जन, अप्रसन्न न हमसे हो जायें।
प्रभु जिनको हमने वरण किया, हम उनका प्रेम सदा पायें॥

वरणीय ओम् अनुपम अनूप
कर परम प्रकाशन ज्ञान सूप
कौन अधम है कौन श्रेष्ठ है
सब प्रकट तुम्हें प्रच्छन्न रूप।

क्यों सुजन श्रेष्ठ हो गये रुष्ट, हम उनको पुनः मना लायें।
प्रभु जिनको हमने वरण किया, हम उनका प्रेम सदा पायें॥

हो उनके मन अब नहीं घृणा
हमें श्रेष्ठ दें कर्म प्रेरणा,
शुभ कार्य भार हम वहन करें
फिर से उनकी मिले मन्त्रणा।

हम यज्ञनिष्ट हों श्रेष्ठ शिष्ट, सब सत्पुरुषों के मन भायें।
प्रभु जिनको हमने वरण किया, हम उनका प्रेम सदा पायें॥

मलिन देह मन मलिन वसन को
सब दुर्गुण दोष दुर्व्यसन को
प्रभु हमसे परे हटाओ जी
दो पुण्य जनों की विहँसन को।

यह आहुति प्रभु स्वीकार करो, प्रिय वरणीय हमें मिल जायें।
प्रभु जिनको हसने वरण किया, हम उसका प्रेम सदा पायें॥

---

६ परमेश ! पड़ौसी बन जाओ

(२)

ओं स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्टो अस्या उषसो व्युष्टौ अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृडीकं सुहवो न एधि स्वाहा। इदमग्नी वरुणाभ्याम् इदन्न मम। ऋ ४।१।५

आओ आओ प्यारे आओ, अब तीर हमारे वस जाओ।
परमेश ! पड़ौसी बन जाओ, जो शीघ्र टेर सुनकर आओ ॥

अति सूक्ष्म और हमसे विराट
यह अकथ तुम्हारा ठाटबाट
हम कैसे पास पहुंच पायें
तुम सहज पधारो परिभ्राट।

निज ज्योति ज्ञान लेते आओ, बनकर शक्ति सुरक्षक आओ।
परमेश ! पड़ौसी बन जाओ, जो शीघ्र टेर सुनकर आओ ॥

सुन्दर प्रभात की बेला में
रवि ज्योति उदय अलबेला में
सब कष्ट हमारे नष्ट करो
प्रभु जीवन की इस मेला में।

प्रातः प्रार्थना सुनकर आओ, सन्ताप मिटाते सब जाओ।
परमेश पड़ौसी बन जाओ, जो शीघ्र टेर सुनकर आओ ॥

हो जाय श्रवण मम यह पुकार
मिट जाय पीर बढ़ जाय प्यार,
आनन्द शान्ति सब मिल जाये
यह जीवन हो अनुपम अपार।

अपना हाथ बढ़ाते जाओ, प्रभु रक्षा का ढाढ़स लाओ।
परमेश पड़ौसी बन जाओ, जो शीघ्र टेर सुनकर आओ ॥

७ टेर हमारी सुन

(३)

ओं इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युरा चके स्वाहा । इदं वरुणाय इदन्न मम । ऋ १।२५।१९

हे नाथ दौड़ कर आ जाओ, अरियों से हमें बचा जाओ ।
प्रभु आज सुनो तुम सुनो अभी, सुनकर पुकार तुम आ जाओ ॥

हे वरुण तुम्हें है वरण किया
यह जग तुमने आबरण किया
प्रभु तुम्हें प्रसन्न बनाने को
हमने सद्गुण आचरण किया ।

आचरण देखकर दया करो, दुख दैन्य दूर करते आओ ।
प्रभु आज सुनो तुम सुनो अभी, सुनकर पुकार तुम आजाओ ॥

दुख दूर तुम्हीं कर सकते हो
सुखपूर्ण तुम्हीं कर सकते हो
निज कृपा करों के करतन से
तुम नाथ त्राण कर सकते हो ।

कर वरण किया शुभ गुण धारण, व्यापक चरण बढ़ाने आओ ।
प्रभु आज सुनो तुम सुनो अभी, सुनकर पुकार तुम आजाओ ॥

यह टेर हमारी सुन लोगे
तो पूर्ण आश भी कर दोगे
हम इसीलिये आहुति देते
होकर प्रसन्न ये ले लोगे ।

शिव सुनो सुनो हे नाथ सुनो, संरक्षण किये चले आओ ।
प्रभु सुनो सुनो तुम सुनो अभी, सुनकर पुकार तुम आजाओ ॥

---

८ अनसुनी नहीं हो माँग (५)

ओ३म् तत्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्रमोषीः स्वाहा। इदं वरुणाय इदन्न मम। ऋ १।२४।११

वन्दना जहां यजमान करें, वे सदन सदा द्युतिमान बनें।
वे विनय शील शुभ कर्म करें, तो यज्ञनिष्ठ यजमान बनें॥

लेकर शुभ कर्म सत्य वाणी
आये थे शरण विनत प्राणी
निज यज्ञ आचरण के द्वारा
कर रहे कामना कल्याणी

सत्कर्म प्रणाली आ जाये, हम कर्मवीर विद्वान बनें।
वे विनयशील शुभ कर्म करें, तो यज्ञनिष्ठ यजमान बनें॥

अनसुनी नहीं हो मांग यही
बन जाय न जीवन स्वाँग कहीं
आओ प्रभु सन्मार्ग दिखाओ
लग जाय दुरति की टांग नहीं।

दे बोध हमें सम्बोध करो, यह दास सदा गतिमान बनें।
वे विनयशील शुभ कर्म करें, तो यज्ञनिष्ठ यजमान बनें॥

सर्वत्र व्याप्त हो वरुणोदय
हो हमें प्राप्त प्रभु सदा सदय
हम असमय नष्ट न हो जायें
सम्पूर्ण मिले वय और विजय।

आचरण शुभ्र की आहुति लो, ये जीवन विमल विहान बने।
वे विनयशील शुभ कर्म करें, तो यज्ञनिष्ठ यजमान बनें॥

---

९ तुम घबड़ाओ मत (६)

ओम् ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञिया पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चतु मरुतः स्वर्काः स्वाहा । इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुदेभ्यः स्वर्केभ्यः- इदन्न मम ।

ये बाधा और समस्याऐं, हम इनसे छुटकारा पायें।
जो जीवन में बन्धन आयें, हम इनसे पार निकल जायें ।।

एक नहीं सैकड़ों हजारों
इस यज्ञ कार्य में बन्धन है,
जो दूर दूर तक फैल रहे
दुर्घर्ष क्रूर अति क्रन्दन है।

शुभ कर्म करें करुणा पायें, श्रुति नियम सभी हम अपनायें ।
जो जीवन में बन्धन आयें, हम इनसे पार निकल जायें ।।

यह सृष्टि नियम कितने कठोर
अनुपालन इनका भारी है,
कर सके अनुसरण इनका यदि
तो राह बने सुखियारी है।

विद्वान और शिल्पी आयें, हाथ पकड़ कर हमें उठायें ।
जो जीवन में बन्धन आयें, हम इनसे पार निकल जायें ।।

तुम घबड़ाओ मत, मत रोओ
तेजस्वी वीर आ समझाऐं
हो जाये मुक्ति भव बन्धन से
हम साथ विष्णु के मुसकाऐं ।

करें सान्त्वना आहुति पायें, प्रभु प्रगति प्रेरणा दे जायें।
जो जीवन में बन्धन आयें, हम इनसे पार निकल जायें ।।

---

१० दुर्दमनीय शत्रु (७)

ओम् अयाश्चाग्नेयऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयासि । अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजऽंस्वाहा । इदमग्नये अयसे इदं न मम ।

हर कहीं नाथ तुम व्यापक हो, यह सत्य समझ में आया है।
हर कहीं साथ तुम नाथ चले, हर कहीं प्रकाश दिखाया है ।।

दुर्दमनीय शत्रु ये सारे
काम क्रोध सब विषय हमारे
देश देह या आत्म गेह के
नाथ शत्रु ये सकल हटा रे ।

जब तुमने शत्रु हटाया है, यह यज्ञ तभी कर पाया है।
हर कहीं साथ तुम नाथ चले, हर कहीं प्रकाश दिखाया है ।।

प्रभु का व्यापक सहयोग रहा
यह कर्म सफल उद्योग रहा,
होगई तुम्हारी अनुकम्पा
जो जीवन का उपयोग रहा ।

नेतृत्व तुम्हारा पाकर ही, यह पथ प्रशस्त कर पाया है ।
हर कहीं नाथ तुम साथ चले, हर कहीं प्रकाश दिखाया है ।।

दो पोषक भेषज या भोजन
मिल जाय हमें शुभ शक्ति सघन
अध्यात्म शत्रु या सन्सारी
कर सके नाथ हम सभी हनन ।

शुभ कर्म किये फिर आहुति दी, तब यज्ञ सफल हो पाया है ।
हर कहीं नाथ तुम साथ चले, हर कहीं प्रकाश दिखाया है ।।

११ दो खोल हमारे बन्धन (७)

ओम् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणायाऽऽदित्याऽदितये च इदन्न मम। ऋ १।२४।१५

विकराल रूप के अरियों ने, कसकर ग्रन्थियाँ लगाई हैं।
ग्रन्थियां नाथ ढीली कर दो, कर रही बड़ी कठिनाई हैं॥

ईश्वर उत्तम बलवान तरुण
तुम हृदय भागये देव वरुण
दो खोल हमारे बन्धन ये
अब बनो दास पर देव करुण।

लो हमें उठा कर भँवर पार, आगे आगे गहराई है।
ग्रन्थियां नाथ ढीली कर दो, कर रही बड़ी कठिनाई है॥

सब उत्तम मध्यम और अधम
बन्धन के क्रन्दन हैं कटुतम
ये बन्धन करदो शिथिल सभी
जीवन में आये सुख उत्तम।

आदित्य ओ३म् अविनाशी से, यह हमने आस लगाई है।
ग्रन्थियां नाथ ढीली कर दो कर रही बड़ी कठिनाई है॥

व्रत नियम तुम्हारे अपनायें
आनन्द मुक्ति का तब पावें
दुःख बन्धन शिथिल तभी होंगे
प्रभु से गठ बन्धन हो जाये।

यह इसीलिये देकर आहुति, तेरी ये ज्योति जगाई है।
ग्रन्थियाँ नाथ ढीली कर दो, कर रही बड़ी कठिनाई है॥

---

१२ दुर्जन दूर चले जायें (८)

ओंम् भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ मा यज्ञꣳहिꣳसिष्टं मा। यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा। इदं जातवेदोभ्याम् इदन्न मम। य।५।३

खुल गई गांठ हो गए ढाठ, छट गए क्षार क्षय छेदन है।
मन सुमन सुमन से मिल जाए, हो तभी सफल सम्मेलन है।

सब दुर्जन दूर चले जायें
प्रिय सज्जन आकर मिल जायें
हो पाप रहित हम ज्ञान वान
उनके समान ही मन पायें।

हम दोष दूर कर शुद्ध बनें, हट गये सभी उद्वेलन हैं।
मन सुमन सुमन से मिल जायें, हों तभी सफल सम्मेलन हैं॥

ये यज्ञ और इनके भर्ता
शुभ कर्म और इनके कर्ता,
हो जांय नहीं ये नष्ट कहीं
प्रभु कृपा रखो हे संघर्ता।

प्रिय ज्ञात वेद विद्वानों से, हो गये प्रेम अनुमेलन हैं।
मन सुमन सुमन से मिल जायें, हों तभी सफल सम्मेलन हैं॥

सन्यासी और वानप्रस्थी
सुख इनसे पायें सब गृहस्थी,
प्रभु आज-आज और अभी-अभी
करदो हमको कल्याण रथी।

इसके ही हित यह आहुति दी, ये यज्ञवेद अधिवेशन है।
मन सुमन सुमन से मिल जायें, हो तभी सफल सम्मेलन है॥

षष्ठ रश्मि

स्वस्ति गीत माला

१ परम पुरोहित (१)

अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् होतारम् रत्नधातमम् ।
ऋ० १।१।१

व्यापक प्रकाश के नायक, यह गीत बन्दना तेरी।
प्रभु अग्नि पुरोहित नेता, सुन मीत बन्दना मेरी ।।

पितु ईश्वर का उपदेश प्रथम
प्रिय पुत्र करें पितु मान मगन
यज्ञ कर्म आरम्भ पलों में
आ अग्नि ज्योति ईश्वर अनुपम।

देव स्तुति अग्र ग्राम्य की, यह गीत अर्चना मेरी।
प्रभु अग्नि पुरोहित नेता, सुन मीत वन्दना मेरी ।।

तुम परम पुरोहित हितकारक
कमनीय यज्ञ के निष्पादक
इस सृष्टि यज्ञ के तुम कर्ता
ऋतु-ऋतु नूतन सुख सम्पादक।

शिल्प कला संघर्ष मध्य, सुन देब कामना मेरी।
प्रभु अग्नि पुरोहित नेता, सुन मीत बन्दना मेरी ।।

हर योग क्षेम के तुम होता
हर रत्न सम्पदा के स्रोता,
प्रभू अग्र, अनुगमन करती है
यह सन्तान पिता की स्तोता।

मेरे पथ दर्शक नायक, यह गीत याचना तेरी।
प्रभु अग्नि पुरोहित नेता, सुन मीत बन्दना मेरी।

---

२ सुन्दर उपाय

(२)

स नः पितेव सूनवेऽग्नेसूपायनो भव । सचस्वा नः स्वस्तये ।

ऋ० १।१।९

प्यारे प्यारे पिता हमारे, तुम सुनो हमारा विनय गान ।
हे पिता सुनो यह विनय गीत, करदो हमको कल्याणवान ॥

हम सेवक पुत्र तुम्हारे हैं
करुणामय पिता हमारे हैं,
सव साधन सुन्दर उपाय से
यह जगत पिता विस्तारे हैं।

प्रभू हमओ उपाय वतलादो, हम सभी बने जग स्वस्तिवान।
हे पिता सुनो यह विनय गीत, करदो हमको कल्याणवान ॥

जो पिता जगत में कहलाता
निज पुत्र जन्म का जो दाता,
जग पिता पुत्र पालन करता
यही हमारा शाश्वत नाता।

हे पिता कृपा की किरणों से, दो सुखदायक विज्ञान दान ।
हे पिता सुनो यह विनय गीत, हमको करदो कल्याणवान ॥

विद्वान वेद विद पण्डित है
धनधान्भ श्रेष्ठ से मंडित हैं,
हमको धन साधन रक्षा दो
प्रिय पिता चरम वल चंडित हैं

सारे दुख दूर पिता कर दो, हमको करदो प्रिय त्राणवान ।
हे पिता सुनो यह विनय गीत, करदो हमको कल्याणवान ॥

—०:०—

३ जब जगत पिता कल्याण करे

(३)

स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः ।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातुनः स्वस्ति द्यावा पृथिवी सुचेतुना ॥

जब जगदीश्वर कल्याण करे, जन जगत तभी यह मान करे ।
यह जगत हमें गतिमान करे, जब जगत पिता कल्याण करे ॥

सब सूर्य चन्द्र ये चमकीले
ऐश्वर्य सकल भूषण शीले,
ये सभी करें कल्याण अभी
नित नित लायें रङ्ग रसीले ।

ये सकल हमें सुखदान करें, मत कहीं हमें भयवान करें ।
यह जगत हमें गतिमान करे, जब जगत पिता कल्याण करे ॥

यह देवी दिव्य गुणों वाली
प्रिय पृथ्वी आलम्ब निराली
इसके निश्चल पर्वत ऊँचे
मेघ माल पोषक जल वाली ।

ये हम पर कृपा वितान करें, पल-पल उत्तम उत्थान करें ।
यह जगत हमें गतिमान करें, जब जगत पिता कल्याण करे ॥

जो लोक प्रकाश प्रदायक है
या जो प्रकाश के पायक हैं,
द्यौ से धरती तक लोक सभी
जीवन के सतत सहायक है ।

ये चेत शुभ्र विज्ञान वरें, हम सकल कार्य अभियान करें ।
यह जगत हमें गतिमान करे, जब जगत पिता कल्याण करे ॥

—:*★*:—

४ हमने आह्वान किया

स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः !
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः ।

सम्यक उपयोग सुजान किया, तो समझो सच आह्वान किया।
जब जब हमने आह्वान किया, तब तब तुमने कल्याण किया ।।

वायु बुलाया हमने तुमको
सोम सृजक शुभ चन्द्र चरण को
ब्रह्मांड भुवन का प्रतिपालक
पति प्यारे मार्तण्ड किरन को ।

जिसने निर्माण महान किया, हमने उसका आह्वान किया।
जब जब हमने आह्वान किया, तब तब तुमने कल्याण किया ।।

प्रिय ज्ञानवान सब श्रेष्ठ मनुज
तन तपः पूत आदित्य सभुज
आयें सब उपदेश सुनायें
पथ अग्रज से पा जायें अनुज ।

प्रभु गुणगश का गुण गान किया, तब सद्गुण का प्रतिदान दिया।
जब जब हमने आह्वान किया, तब तब तुमने कल्याण किया ।।

रवि बायु सोम की बाँह गही
उपयोग किया विधि थाह गही
अपने आचार्य बृहस्पति से
लेकर शिक्षा निज राह गही।

गुरु ने हमको विज्ञान दिया, तब प्रभु ने यह सुखदान किया।
जब जब हमने आह्वान किया, तब तब तुमने कल्याण किया ।।

—०※०—

५ सबको रूपाकृति देते

विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये ।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः ।

विद्वान देव जन आ जाओ, अपना उपदेश सुना जाओ ।
ज्ञानी जन आज यहां आओ, आशीष सुमङ्गल दे जाओ ।।

सम्पूर्ण विश्व के गुरु ज्ञानी
हम बनें उन्हीं के अनुगामी
उपदेश श्रवण करके उनका
बन जांय सभी हम उत्क्रामी ।

हे अग्नि ईश तुम आ जाओ, निज शक्ति हमें कुछ दे जाओ ।
ज्ञानी जन आज यहां आओ, आशीष सुमंगल दे जाओ ।।

सबके शरीर को गति देते
सबको रूपाकृति थिर देते
होकर वैश्वानर जठराग्नि
भोजन का पाचन कर देते ।

शुभ देह-रूप पाचन लाओ, मम तन-मन स्वस्थ वना जाओ ।
ज्ञानी जन आज यहाँ आओ, आशीष सुमंगल दे जाओ ।।

सूर्य अग्नि या विद्युत ऊर्जा
हमको वरे सुमंगल पूजा
शासक रुद्र रुलायें अरि को
हमें बचाये ले शस्त्र सूर्जा ।

पाप क से हमें बचमाओ, आज रुद्र रक्षा को आओ ।
ज्ञानी जन आज यहां आओ, आशीष सुमंगल दे जाओ ।।

६ सौर ऊर्जा

स्वस्ति मित्रा वरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि।
अदिति अखंडित धरा बनायें, प्रभू अखंड व्रत मंगल गायें।
ऐश्वर्य सकल लेकर आयें, विद्यायें सब सुख वर्षायें॥

दैहिक प्राण अपान हमारे
ये लायें कल्याण सहारे
गौऐं सजें इन्द्रिया सारी
पोषित होकर स्वस्ति प्रचारें।

जहाँ जहां विचरण को जायें वहीं रेवती बनकर आयें।
ऐश्वर्य सकल लेकर आयें, विद्यायें सब सुख वर्षायें॥

यह इन्द्र सूर्य का अग्नि रूप
यह सौर ऊर्जा का स्वरूप
आ जीवन में निर्माण करें
देकर वैभव की धवल धूप।

विधि सौर ऊर्जा हम पायें, समझो इन्द्र कृपा कर जायें।
ऐश्वर्य सकल लेकर आये, विद्यायें सब सुख बर्षायें॥

अग्नि तुम्हारा विद्युत स्वरूप
निर्माण रचायें विविध रूप
सब सुविधा शक्ति यही देती।
देती जल पोषक दुग्ध कूप।

प्रिय भूमि कृपा दृढ़ विकसायें, कल्याण सुदृढ़ ईश्वर लायें।
ऐश्वर्य सकल लेकर आयें, विद्यायें सब सुख बर्षायें॥

---

७ स्वस्ति पथ

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि। ऋ० ५।५१।११ से १५

हम रवि शशि की भांति मनोरम, शुभ स्वस्ति पन्थ अनुसरण करें।
कल्याण हमारा जिससे हो, हम उसी पन्थ का वरण करें॥

प्रभु चलते रहें निरन्तर हम
रवि चन्द्र नहीं ज्यों जाते थम
प्रिय प्राण अपान जीव में ज्यों
चल जीवन को करते उत्तम।

हम ज्योति लुटाते हुए चलें, हर चरण शुभ्र आचरण करें।
कल्याण हमारा जिससे हो, हम उसी पन्थ का वरण करें॥

जो सुजन हमारे दाता हैं
अघ पीड़ा के जो त्राता हैं
प्यारे विद्वान महा मानव
जग विषयों के जो ज्ञाता हैं।

पाकर हम उनकी सङ्गति को, सन्ताप सकल सन्तरण करें।
कल्याण हमारा जिससे हो, हम उसी पन्थ को वरण करें॥

यों नित्य हमारा चलन रहे
कल्याण ओर ही गमन रहे
गुण दाता ज्ञाता त्राता का
हर क्षण उन्नत अंकुरण रहे।

सब सन्त मनीषी विज्ञों का, हम बार बार अनुकरण करें।
कल्याण हमारा जिससे हो, हम उसी पन्थ को वरण करें॥

८ राह दिखायें

ये देवानाँ यज्ञिया यज्ञियानाँ मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात. स्वस्तिभिः सदा नः ।
ऋ० ७।३५।१५

पथ भ्रष्ट कहीं हम हो जायें, फिर से हमको राह दिखायें।
जो गीत देव गाते आये, हमको भी वे गीत सुनायें ॥

विद्वानों में यज्ञवान जो
यज्ञवान में पूज्य प्राण जो,
मनुज मात्र के श्रद्धा भाजन
विप्र मिले हों सत्यवान जो।

सन्तों से संगम हो जाये, सन्मार्ग हमें फिर मिल जाये।
जो गीत देव गाते आये, हमको भी वे गीत सुनायें ॥

अमर प्रतिष्ठित प्राणवान जो
रखते हों शुभ सत्य ज्ञान जो,
हमको ऐसा मार्ग दिखायें
हो जायें हम कीर्तिवान जो।

विद्वान प्रशंसित जन आयें, हमको भी प्रशस्ति दे जायें।
जो गीत देव गाते आये, हमको भी वे गीत सुनायें ॥

विद्वानों का आह्वान किया
हमने उनका गुणगान किया,
निज रक्षा के लिये उन्हीं की
शुभ संगति का सन्धान किया

आकर निज उपदेश सुनायें, प्रिय वचनों से हमें बचायें।
जो गीत देव गीत आये, हमको भी वे गीत सुनायें ॥

६ पुत्र पात्रता

येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः ।
उक्थशुष्मान् वृषभरान्त्स्वप्नसस्तां आदित्यां अनुमदा स्वस्तये ।

अपने आदित्य पुत्र गण को, माता पीयूष पिलाती है।
माता पीयूष पिलाती है, तब मानवता मुस्काती है ॥

यह जननी धरती निर्माता
है मधुर दुग्ध रस की दाता,
किसको रसपान कराती है
प्रिय पीयूष प्रदाता माता।

निज पुत्र पात्रता लखकर ही, माँ दुग्ध वक्ष में लाती है।
माता पीयूष पिलाती है, तब मानवता मुस्काती है ॥

द्यौ लोक अखण्डित अन्तरिक्ष
भरपूर मेघ जो लिए वक्ष,
ये बरसाते हैं सुख किसको
निज प्रभा पोष के कोष कक्ष।

प्रशंसनीय वीर बालक को, यह प्रकृति पोष बिखराती है।
माता पीयूष पिलाती है, तब मानवता मुस्काती है ॥

जो वृषभ भाँति सुखभर्ता है
शुभ कर्मों के जो कर्ता हैं
वही जगज्जननी अखण्ड के
पीयूष पुण्य संधर्ता हैं।

इनके कल्याण मोद को ही, लोकों को निधि-विधि आती है।
माता पीयूष पिलाती है, तब मानवता मुस्काती है ॥

१० आत्म निरीक्षण

नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्व मानशुः ।
ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये ।

निशि वासर कर्मशील रहकर, जो नहीं समय को खोते हैं ।
जो अपलक आत्म निरीक्षक हैं, जन वही प्रतिष्ठित होते हैं ॥

वस नहीं प्रतीक्षा करते हैं
निज स्वयँ समीक्षा करते है,
जो आत्म निरीक्षण के द्वारा
निज कर्म परीक्षा करते हैं ।

हर क्षण रहते जो सावधान, जो नहीं प्रमादी होते हैं ।
जो अपलक आत्म निरीक्षक हैं, जन वही प्रतिष्ठित होते हैं ॥

विद्वान यही बन जाते हैं
उत्कर्ष महानता पाते हैं
अमरत्व प्राप्त करके मानव,
जो ज्योति रथी बन जाते हैं ।

पग पग प्रकाश अपना करके, निज धवल ध्येय को धाते हैं ।
जो अपलक आत्म निरीक्षक है, जन वहीं प्रतिष्ठित होते हैं ॥

ज्योतिष्मान रम्य रथ पाकर
अपने सारे पाप हटा कर
अबिनाशी प्रज्ञा के द्वारा
बसते दिव्य लोक में जाकर ।

नित करके कल्याण हमारा, कमनीय यही प्रिय होते हैं ।
जो अपलक आत्म निरीक्षक हैं, जन वही प्रतिष्ठित होते हैं ॥

---

११ नित नमन हमारा

सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिहृता दधिरे दिवि क्षयम् ।
तां आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महोआदित्याँ अदितिं स्वस्तये ।

सब श्रेष्ठ जनों को नमस्कार, उनको सम्मान हमारा है।
जो रत रहते शुभ कर्मों में, उनको नित नमन हमारा है ॥

भली भांति जो राज्य प्रभा का
करें प्रकाशित विश्व सभा का
जो स्वयं हो गये ज्योतिमान
बिखरायें जो प्रेम विभा का ।

जो अपनी भी उन्नति करते, करते उत्थान हमारा है।
जो रत रहते शुभ कर्मों में, उनको नित नमन हमारा है ॥

अपने शुभ कर्मों के द्वारा
जिसने अपना यश विस्तारा
छल कपट कुटिलता को छोड़ा
दिव्य उच्च पद पाया प्यारा ।

ऐसे सत्पुरुषों को सम्यक, उर अभिवादन की धारा है।
जो रत रहते शुभ कर्मों में, उनको नित नमन हमारा है ॥

आदित्य पुत्र महनीय सभी
कल्याण करें कमनीय सभी
पिता रूप या माता स्वरूप
दे आशीष स्तवनीय अभी ।

प्रभु पुत्र और प्रभु व्यापक का, अब हमने लिया सहारा है।
जो रत रहते शुभ कर्मों में, उनको नित नमन हमारा है ॥

—•❋•—

१२ गा रहा मधुर ये गीत कौन

को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यतिष्ठन् ।
को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहम् स्वस्तये ।

ये स्तवन गीत बुन रहा कौन, सुन सिद्ध कर रहा गीत कौन ।
गा रहा मधुर ये गीत कौन, सुन रहा गीत वह मीत कौन ।।

किसनें यह ऋचा रचाई है
मृदु भाव भंगिमा लाई है,
इनको परिपक्व किया किसने
किसने संस्तुतियां गाई हैं ।

ये छेड़ रहा संगीत कौन, कर रहा सरस स्वर प्रीति कौन ।
गा रहा मधुर ये गीत कौन, सुन रहा गीत वह मीत कौन ।।

ज्ञानी अग्रज या अनुज सभी
जग मनन शील ये मनुज सभी
इनके शुभ कर्म पूर्ण करता
कौन हटाता अघ दनुज सभी ।

हिंसा पर करता जीत कौन, दे रहा अहिंसा रीत कौन ।
गा रहा मधुर ये गीत कौन, सुन रहा गीत वह मीत कौन ।।

क्या तुमने कुछ अनुमान किया
हो भले अपरमित ज्ञान किया
प्यारे उस परम पिता ने ही
वरदान पूर्ण यह गान किया ।

ये छोड़ रहा संगीत कौन, यह मुखर किन्तु वह मीत मौन ।
गा रहा मधुर ये गीत कौन, सुन रहा गीत वह मीत कौन ।।

---

१३ वस्तुएँ शुद्ध हो जायें

येभ्यो होत्राँ प्रथमामायेजे मनुःसमिद्धाग्निर्मनसा सप्तहोतृभिः ।
त आदित्यां अभयं शर्म यच्छतः सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये ।

पावन यज्ञ अग्नि के द्वारा, सब वस्तुएँ शुद्ध हो जायें ।
जब प्रकृति वस्तुएँ शुद्ध बनें, तो जग का कल्याण बढ़ायें ।।

प्रथम कोटि के यज्ञ कर्म को
दीप्त किया इस अग्नि धर्म को
किया मनस्वी ने आयोजित
जग हितकारी यज्ञ मर्म को ।

जब बने मनस्वी अधिकारी, तब क्यों नहीं स्वस्ति हम पावें ।
जब प्रकृति वस्तुएँ शुद्ध बनें, तो जग का कल्याण बढ़ायें ।।

यह केवल कर से नहीं किया है
सप्त होत्र ने इसे किया है
सब नाक आंख मुख कानों को
जोर लगा मन यज्ञ किया है ।

सब प्रकृति वस्तुएं अभय बनें, तब मधुमय सुख लेकर आयें ।
जब प्रकृति वस्तुएं शुद्ध बनें, तो जग का कल्याण बढ़ायें ।।

अभय पूर्ण सब शुद्ध पदार्थ
सुविधायें सारे पुरुषार्थ
सुगम बनाएं जीवन पथ को
हमको दे कल्याण यथार्थ ।

जो किये सङ्कलन हमने हैं, वे शुभ शुद्ध श्रेष्ठ हो जायें ।
जब प्रकृति वस्तुएं शुद्ध बनें, तो जग का कल्याण बढ़ायें ।।

———

१४ प्रशासक करें पालना

य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः ।
ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवा सः पिपृता स्वस्तये ।

जगन्नियन्ता जगदीश्वर, सर्वोत्तम सत्ताधारी है ।
मनुज प्रशासक जन गण पालक, ही सब सच्चे अधिकारी हैं ॥

चेतना ज्ञान से पाते हैं
जग की सत्ता भी पाते हैं
जड़ चेतन के स्वामी होते
जो मननशील हो जाते हैं ।

इस भुवन भूमि के पति होकर, देते जगमग उजियारी हैं ।
मनुज प्रशासक जन गण पालक, ही सब सच्चे अधिकारी हैं ॥

यही मनीषी हमें बचाते
और सदा सन्मार्ग दिखाते
जो पाप किए या किए नहीं
सबके प्रति वे सजग बनाते ।

अध्यात्म मार्ग पर ले जाते, देकर साधन सन्सारी हैं ।
मनुज प्रशासक जन गण पालक, ही सब सच्चे अधिकारी हैं ॥

प्रभु आओ प्रभु पुत्रो आओ
सभी ओर से हमें जगाओ
हे परोपकारी विद्वानो
पाप मार्ग से हमें बचाओ ।

कल्याण हेतु आह्वान किया, आप ही हर्ष हितकारी हैं ।
मनुज प्रशासक जन गण पालक, ही सब सच्चे अधिकारी हैं ॥

१५ दुख मोचन

भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम् ।
अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये ।

कर्म क्षेत्र यह जगत तुम्हारा, है पग पग पर संघर्ष बड़ा ।
हम तुमको आज बुलाते हैं, ये पार करो संघर्ष बड़ा ॥

हे इन्द्र वली विजयी प्यारे
दुःख पापों के मोचन हारे
है तुम्हें बुलाना अधिक सरल
तुम करते कर्म सुकृत सारे ।

परमेश ज्येष्ठ या पुरुष श्रेष्ठ, अरि दूर करो दुर्धर्ष बड़ा ।
हम तुमको आज बुलाते हैं, यह पार करो संघर्ष बड़ा ॥

तुम दिव्य श्रेष्ठ गुण वाले हो
प्रभु या जग पुरुष निराले हो,
बरणीय मित्र या तेजवान
देते तुम सुभग उजाले हो ।

अपना पथ दर्शन देकर के, करदो वैभव उत्कर्ष बड़ा ।
हम तुमको आज बुलाते हैं, यह पार करो संघर्ष बड़ा ॥

अन्तरिक्ष-द्यौ-भूमि शक्तियां
आशामय कह सुपथ उक्तियाँ
प्रभु प्यारे या प्रभु गुण धारे
दे हमको सत्पुरुष युक्तियाँ ।

प्रिय आओ कल्याण बढ़ाओ, कर दो जीवन में हर्ष बड़ा ।
हम तुमको आज बुलाते हैं, यह पार करो संघर्ष बड़ा ॥

१६ जीवन नैय्या

सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम् ।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये ।

हम स्वयँ पार हो जायेंगे, तुम कृपा करो तो खेवैया ।
जिससे पार उतर जायें, दे दो हमको ऐसी नैया ।।

तन तरणी तुमने हमको दी
ये सन्तरणी प्रति रक्षक दी
इस धरती पर कर द्यो प्रकाश
सुख करणी सुन्दर हमको दो ।

हो जाय न इसमें छेद कहीं, डूबे न कभी मेरी नैंया ।
जिससे पार उतर जायें, दे दो हमको ऐसी नैया ।।

भली भाँति निर्माण हुआ हो
त्रुटि विहीन उत्थान हुआ हो
बन गई दिव्य प्रभु रचना यह
और स्वस्ति प्रस्थान हुआ हो

अपराध रहित यह बनी रहे, सन्ताप नहीं दे यह नैया ।
जिससे हम पार उतर जायें. दे दो हमको ऐसी नैया ।।

गतिमान मन्त्र बल का धौंका
क्षति छिद्र नहीं दें क्षण चौंका
कर सके आत्म सुख आरोहण
भवसागर पार करे नौका ।

कल्याण हमें दे आये रे- ये छत छैया बने उछैया ।
जिससे हम पार उतर जायें, दे दो हमको ऐसी नैया ।।

१७ तुम सहज सुन लिया करते

विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्रुतः ।
सत्यया वो देवहूत्या हुवेम् शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये ।

गुण गायन दिव्य तुम्हारा है, इसका ले लिया सहारा है ।
तुम सहज सुन लिया करते हो, तुमको इसलिए पुकारा है ।।

जिस भांति हमारी रक्षा हो
जीवन की सफल परीक्षा हो
हो जाय निवारण दुर्गति से
उपदेश पूर्ण वह शिक्षा हो ।

यजनीय श्रेष्ठ प्रभु या मानव, तुमसे ही त्राण हमारा है ।
तुम सहज सुन लिया करते हो, तुमको इसलिए पुकारा है ।।

यदि जग में हिंसक बढ़ जायें
जो जीवन में पीड़ा लायें
तब परमेश्वर ही कृपा करे
प्रभु-पुत्र वीर आगे आयें ।

ये नष्ट करें आतंकवाद, इसका ही सदा सहारा है ।
तुम सहज सुन लिया करते हो, तुमको इसलिए पुकारा है ।।

शुभ स्तुति जो आज उचारी है
यह ज्योतित दिव्य तुम्हारी है
वन्दना सुनो आह्वान सुनो
आई रक्षा की बारी है ।

प्रभु सर्वोत्तम उत्तम सपूत, दोनों ने जगत सँवारा है ।
तुम सहज सुन लिया करते हो, तुमको इसलिए पुकारा है ।।

---

१८ निर्बलता नष्ट करो

अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः ।
आरे देवाद्वेषो अस्मद् युयोतनोरुणः शर्म यच्छता स्वस्तये ।

जीवन के सारे द्वेष दोष, ये अन्धकार या असन्तोष ।
हे नाथ पाप सब दूर करो, देकर सुन्दर कल्याण कोष ।।

मेरी निर्बलता नष्ट करो
तन शक्ति हीनता नष्ट करो
हो रोगों का आक्रमण नहीं
हर आत्म हीनता नष्ट करो,

दो देह हृदय आत्मोन्नति, हे नाथ करो आनन्द कोष ।
हे नाथ पाप सब दूर करो, दे कर सुन्दर कल्याण कोष ।।

आहुति हीन न होने पायें
प्रिय यज्ञ कर्म न बिसरायें
दे दान सहायक रहो सदा
मम दान हीनता हट जाये ।

दृग दृष्टि बुद्धि के पाप रोष, प्रभु दूर करो हे आशुतोष ।
हे नाथ पाप सब दूर करो, दे कर सुन्दर कल्याण कोष ।।

सब घृणा ईर्ष्या चूर करो
अपराध वृत्ति सब दूर करो
जिससे हो उत्थान हमारा
वे साधन सब भरपूर करो ।

भगवान ओ३म् विद्वान सोम, कल्याण सुभग दे पारितोष ।
हे नाथ पाप सब दूर करो, देकर सुन्दर कल्याण कोष ।।

१९ मेरे पथ नायक

अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि ।
यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानिदुरिता स्वस्तये ।

न्याय नियम जिसने अपनाया, कल्याण मार्ग उसने अपनाया ।
कल्याण-मार्ग उसने पाया, दुर्गुण जिसने दूर भगाया ॥

आदित्य पुत्र हे श्रेष्ठ जनो
मेरे पथ नायक ज्येष्ठ बनो
विधि सुनीति की करो प्रेरणा
दुर्व्यसन और दुख दोष हनो

अपना सारा दुरित हटाया, तब हमने उन्नति पथ पाया ।
कल्याण-मार्ग उसने पाया, दुर्गुण जिसने दूर भगाया ॥

हो हिंसा की आखेट नहीं
हो देह रोग की भेंट नहीं
जो स्वस्थ सबल रहता मानव
निर्बल क्षुधार्थ हो पेट नहीं ।

अनुकूल प्रजा जग को पाया, सहयोग सफल तब हो पाया ।
कल्याण-मार्ग उसने पाया, दुर्गूण जिसने दूर भगाया ॥

जो अधीनस्थ सन्तान सभी
समुदाय प्रजा पहचान सभी
कर्तव्य करें हम तब पायें
इस जीवन के उत्थान सभी ।

जब सबने सहयोग निभाया, तब स्वस्ति लक्ष्य हमने पाया ।
कल्याण-मार्ग उसने पाया, दुर्गुण जिसने दूर भगाया ॥

२० हितकारी संग्राम

यं देदासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हितेधने।
प्रातर्यावाणं रथमिन्द्रं सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये।

सुन्दर दिया देह रथ हमको, आरूढ़ इसी पर हो जायें।
रथ बने हमारा गति वाहक, हम ललित लक्ष्य इससे पायें॥

कृषि विद्या में निपुण किसानो
बिज्ञान कला के बिद्वानो
अन्नादि भोग्य के साधन दो
यह माँग हमारी तुम मानो।

शूरबीर दें साथ हमारा, तब पग-पग पर हम बल पायें।
रथ बने हमारा गति वाहक, हम ललित लक्ष्य इससे पायें॥

यह हितकारी संग्राम खड़ा
इसमें तुमसे है काम पड़ा
हे मरुत शत्रुओं को मारो
दे विजय केतु अभिराम बड़ा।

जब शत्रु हमारे मिट जाये, हम तभी सफलता को पायें
रथ बने हमारा गति वाहक, हम ललित लक्ष्य इससे पायें॥

सुन्दर प्रभात की बेला में
की सन्धि जगत के मेला में
संध्या में प्रभु से किया मेल
तब शक्ति मिली जग खेला में।

कल्याण मार्ग पर बढ़ जायें, ले मनुजः देह तब जय पायें।
रथ बने हमारा गति वाहक, हम ललित लक्ष्य इसमें पायें॥

२१ रुदन रोक मुस्कान वरो

स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वत्यप्सु बृजने स्वर्वति ।
स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन ।

हे नाथ इन्द्र आगे आओ, सर पर निज हाथ महान धरो ।
यहाँ वहां हर कहीं हमारा, हे जगन्नाथ कल्याण करो ।।

सुन्दर समतल भूमि मनोरम
वन रहे जहां हो मार्ग सुगम
वीहड़ बंजर और मरुस्थल
पथ हीन भूमि हो या दुर्गम

ऐश्वर्य हेतु हो गमन जहां, प्रभु वहीं सफल अभियान करो ।
यहाँ वहां हर कहीं हमारा, हे जगन्नाथ कल्याण करो ।

हम शुष्क धरातल पर जायें
जल मग्न भूमि में या जायें
हर कही हमें सन्मार्ग वरो
जा अन्तरिक्ष में मँड़रायें ।

सूर्यलोक तक करे विमानन, सुखमय पद चलन उड़ान करो ।
यहाँ वहाँ हर कहीं हमारा, हे जगन्नाथ कल्याण करो ।।

सन्तति दाता नारी सुभग
बा उनके उत्तम जनन अंग
प्रभु इन्हें रखो तुम स्वस्थ सुदृढ़
आये नित जीवन में उमंग ।

दुःख में दो साहस आश्वासन, प्रभु रुदन रोक मुस्कान वरो ।
यहां वहां हर कहीं हमारा, हे जगन्नाथ कल्याण करो ।।

२२ भूमि मनोरम

स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठारेक्णस्वत्यभि या वाममेति।
सा नो अमासो अरणे निपातु स्वावेशा भवतु देवगोपा।
ऋ० १०।६३।३-१५

यह भूमि जीविका का साधन, सम्यक आश्रय उजियारी है।
यह भूमि हमारा उत्तम घर, धन धान्य वती अति प्यारी है॥

भूमि मनोरम सुन्दर सारी
सुरभित मृदु फूलों की क्यारी
निश्चय धन धान्य लिये उत्तम
दे रही मार्ग मङ्गल कारी।

यह भूमि प्राप्त जो हुई हमें, इसमें ही स्वस्ति हमारी है।
यह भूमि हमारा उत्तम घर, धन धान्य वती अति प्यारी है॥

होवे चाहे नव नगर निगम
हो जहां प्राणियों का सङ्गम
दो भूमि हमें आवास वहां
हो चाहे निर्जन वन दुर्गम।

हो वहां कहीं भी पतन नहीं, भू जहाँ कहीं सहचारी है।
यह भूमि हमारा उत्तम घर, धन धान्य वती अति प्यारी है॥

हे मातृ भूमि तुम रहो सदय
दो हमको सुन्दर घर आश्रय
विद्वान धार्मिक देव शक्तियां
करती हों रक्षा का निश्चय।

परमेश पिता या भू माता, हर कहीं यही उपकारी है।
यह भूमि हमारा उत्तम घर, धन धान्य वती अति प्यारी है॥

२३ धेनु हमारी

इषे त्वौर्ज्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्म णआप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईषत माघश्ँसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि।

खं ब्रह्म हमें गतिमान करें, हम जहाँ तहां प्रस्थान करें।
हमको धन धान्य प्रदान करें, प्रभु सुखमय पूर्ण प्रयाण करें॥

अन्नादि भोग्य वस्तुओं हेतु
निज तेज पराक्रम बलों हेतु
हे देव हमें ऐश्वर्य वरो
जीवन उमङ्ग संबलों हेतु।

सत श्रेष्ठ प्रेरणा हमको दें, आगे बढ़कर उत्थान करें।
हमको धन धान्य प्रदान करें, प्रभु सुखमय पूर्ण प्रयाण करें॥

सबल स्वस्थ हों धेनु हमारी
क्षय करी नहीं हो बीमारी
पर्याप्त वत्स बछिया देकर
हो दुग्ध भाग वैभव धारी।

राष्ट्रोन्नति के लिये धेनुएं, नव नित्य हमें बलवान करें।
हमको धन धान्य प्रदान करें, प्रभु सुखमय पूर्ण प्रयाण करें॥

हों गौ रक्षक गोपाल जहाँ
हों धेनु वहां हों ग्वाल जहां
इनका स्वामी हो चोर नहीं
हो धेनु हनन अप जाल नहीं।

पशु धन की रक्षा के द्वारा, हे नाथ धनी यजमान करें।
हमको धन-धान्य प्रदान करें, प्रभु सुखमय पूर्ण प्रयाण करें॥

२४ आलस्य रहित हों

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद् बृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे।

हे नाथ हमें दो कर्म बुद्धि, जीवन में लाये उजियाली।
जीवन की जगमग उजियाली, हो हमको सुख देने वाली॥

हो जाय अहिंसा ग्रस्त नहीं
जो हो हमको विपरीत नहीं
जो क्रियाशील संकल्प वरें
विद्वान करें अप्रीति नहीं।

होकर सुन्दर संकल्पवान, बन जायें हम वैभवशाली।
जीवन की जगमग उजियाली, हो हमको सुख देने वाली॥

विद्वान अग्र नायक आयें
बनकर सभी सहायक आयें
आलस्य रहित हों सावधान
लेकर बुद्धि विधायक आयें।

प्यारे विद्वान सर्वदा ये, हमें बनायें प्रतिभा शाली।
जीवन की जगमग उजियाली, हो हमको सुख देने वाली॥

विद्वानों की सुन्दर शिक्षा
करती रहे हमारी रक्षा
विद्वानों के पथ दर्शन की
प्रभु से हमने मांगी भिक्षा।

देव तुम्हारी कृपा निराली, जो हमको वरती हरियाली।
जीवन की जगमग उजियाली, हो हमको सुख देने वाली॥

---

२५ जहाँ सुमति तहां सम्पति

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाँ रातिरभि नो निवर्तताम् ।
देवानाँ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ।

परमेश करो यह अनुकम्पा, दो विद्वानों का संग हमें ।
विद्वान मित्र बनकर आयें, सिखलायें उत्तम ढंग हमें ।।

हों ज्ञान गहन गम्भीर लिये
विद्या के अनुभव बीर लिये
व्यवहार किन्तु वे सरल करें
अपनत्व प्रेम हों धीर लिये ।

निज सहज भाव से आ जायें, दे जायें सहज उमंग हमें ।
विद्वान मित्र बनकर आयें, सिखलायें उत्ताम ढंग हमें ।।

जहाँ सुमति तहाँ सम्पति नाना
पहले हमको सुमति दिलाना
जो कभी किया हो दान कहीं
प्रतिदान वही कुछ लौटाना ।

प्रिय पूज्यनीय विद्वान देव, दें मोद मनोरम रंग हमें ।
विद्वान मित्र बनकर आयें, सिखलायें उत्तम ढंग हमें ।।

वर वैद्य चिकित्सा विज्ञानी
उनसे हो मित्रता सुहानी
लम्बी जीवन आयु बढ़ायें
जो रहें हमारे कल्याणी ।

हम सफल रहें सब क्षेत्रों में, बलवान स्वस्थ दें अंग हमें ।
विद्वान मित्र बनकर आयें, सिखलायें उत्ताम ढंग हमें ।।

---

२६ पूषा--पोषण कारी

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ।

प्रभु के बिना ठिकाना क्या, कोई और नहीं अँगनाई ।
हमने बढ़कर टेर लगाई, फिर क्यों तुमने देर लगाई ।।

प्रभु के ईक्षण की यह माया
उसने दर्शन यह दिखलाया
जो नाथ जगत का स्वामी है
उसने ही यह जगत बनाया ।

जगत चराचर संचारक तक, हमने अपनी पेंग बढ़ाई ।
हमने बढ़कर टेर लगाई, फिर क्यों तुमने देर लगाई ।।

प्रभु 'पूषा' पोषण कारी हो
हर क्षण करते रखवारी हो
विज्ञान विभव दोनों ही के
पालन कर्ता अधिकारी हो ।

इसी अकेले अधिशाषी से, जग भर ने कुबेरता पाई ।
हमनें बढ़कर टेर लगाई, फिर क्यों तुमने देर लगाई ।।

हो हिंसा रहित स्वस्ति कारी
जग सभी तुम्हारा आभारी
आओ आओ हमें बचाओ
कर दो रक्षा अभी हमारी ।

अब तो होगे तुम्हीं सहाई, हमने तुमसे आश लगाई ।
हमने बढ़कर टेर लगाई, फिर क्यों तुमने देर लगाई ।।

---

२७ छाया विद्वानों की

स्वस्ति नः इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।

प्रभु एक देव की बात नहीं, यह सब देवों की माया है ।
हमें चाहिये नाथ तुम्हारे, सब विद्वानों की छाया है ।।

इन्द्र बढ़ायें विद्युत जल को
वृद्ध श्रवा नभ-श्रवण कमल को
पूषा पोषक वायु बहाये
और वृहस्पति ज्ञान अनल को ।

तप तार्क्ष्यं भूमि का वड़वानल, जग में सबकी ही दाया है ।
हमें चाहिये नाथ तुम्हारे, सब विद्वानों की छाया है ।

क्षत्रिय राजा इन्द्र हमारा
आकर जब उसने हुंकारा
वैश्य बना यह पूषा पोषक
श्रुति वैभव का किया सहारा ।

शूद्र परिश्रम बड़बानल ने, सहयोग सदा विकसाया है ।
हमें चाहिये नाथ तुम्हारे, सब विद्वानों की छाया है ।।

विमल वृहस्पति ब्राह्मण आया
सन्मार्ग उसी नें दर्शाया
यों बृहत ब्रह्म के दलबल से
विद्वानों ने साथ निभाया ।

प्रभु ब्राह्मण, क्षत्रिय, वेश्य शूद्र, सबका साथ हमें भाया है ।
हमें चाहिये नाथ तुम्हारे, सब विद्वानों की छाया है ।।

—:*★*:—

२८ अंग अंग सुमंगल

भद्रं कर्णेभि शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।
य० २५।१४, १५, १८ १९, २१।

तुम रहते हो साथ हमारे, हम रहें तुम्हारे संग-संग।
हे नाथ करो अब अनुकम्पा, भर जाँय सुमंगल अंग-अंग॥

हे देवेश्वर है विनय यही
जगदीश बनो अब सदय सही
सब यज्ञ यजन कर्ताओं को
हे यजनीश्वर दो विजय वही।

यह देह तुम्हीं ने की प्रदान, हो जाय नहीं अब रंग भंग।
हे नाथ करो अब अनुकम्पा, भर जाँय सुमंगल अंग-अंग॥

यह सुनें कान कल्याण सदा
हो नयन दृष्टि कल्याण प्रदा
प्रत्येक अङ्ग आभास करे
तेरी महिमा का ज्ञान सदा।

बलवान बने तन का वितान, हो जाय नहीं ये तंग-तंग।
हे नाथ करो अब अनुकम्पा, भर जाय सुमंगल अंग-अंग॥

प्रभु गीत करें हम उच्चारन
आदेश तुम्हारा कर पालन
आयु हमारी देव हितैषी
हो देह आत्म सुख संचारन।

कल्याण वान उत्तम उमंग, हर समय दमन हो दंग-जंग।
हे नाथ करो अब अनुकम्पा, भर जाये सुमंगल अंग-अंग॥

---

२८ स्तुतियों में रम जाओ

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये
नि होता सत्सि बर्हिषि ।

सा० छन्द आ० प्रपा०१ मन्त्र १

मेरे प्यारे प्रभु आ जाओ, गीत स्तुतियों में रम जाओ ।
यह हृदय तुम्हारा मन्दिर है, प्रभु इसमें आकर बस जाओ ।।

प्रभु गीत स्तुति का श्रवण करो
यह सफल सुजीवन हवन करो
मेरी दुख पीड़ा हरने को
मेरे ईश्वर आगमन करो ।

हर हव्य भोग के दाता हो, निज हव्य हमें भी दे जाओ ।
यह हृदय तुम्हारा मन्दिर है, प्रभु इसमें आकर बस जाओ ।।

प्रभु दुनियां के ओर छोर से
इस जीवन के सभी ओर से
प्रभु आकर सन्ताप मिटाओ
अपनी सुखमय कृपा कोर से ।

हो भक्ति मगन बन्दन करूँ, वन्दना दया कर सुन जाओ ।
यह हृदय तुम्हरा मन्दिर है, प्रभु इसमें आकर बस जाओ ।।

प्रभु तुम्हीं हमारे होता हो
कामना पूर्ति के श्रोता हो
मम हृदय यज्ञ का कुण्ड बना
हो तुम्हीं गीत तुम श्रोता हो ।

मम हृदय यज्ञ का मन्दिर है, प्रभु आहुति लेकर रम जाओ ।
यह हृदय तुम्हारा मन्दिर है, प्रभु इसमें आकर बस जाओ ।।

—०✻०—

३० तुम होता और विधाता

त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः देवेभिर्मानुषे जने ।
सा० छन्द आ० प्रपा० १ मन्त्र २

आनन्द हमें मिल जायेगा, यदि तुमसे अपना नाता हो ।
प्रभु मेरे जीवन यज्ञों के, तुम होता और विधाता हो ॥

हे प्रभा रूप ईश्वर प्यारे
सब सृष्टि यज्ञ हैं विस्तारे
इस जग के तुम हितकारी हो
हो इसके आधार सहारे ।

श्रेष्ठ कर्म की पुण्य प्रेरणा, उत्साह अपरमित दाता हो ।
प्रभु मेरे जीवन यज्ञों के, तुम होता और विधाता हो ॥

हो परमेश्वर गुणवान महा
हम कर सकते गुणगान कहाँ
गुण अंश तुम्हारे प्राप्त करें
तो हो जाये कल्याण यहां ।

मैं राही हूं गुणग्राही हूँ, इस तन मन जग के त्राता हो ।
प्रभु मेरे जीवन यज्ञों के, तुम होता और विधाता हो ॥

प्रभु गुण चिन्तन की ले चाबी
हम मननशील हों मेधावी
उसके गुणगान आचरण से
हो भाग्य हमारा उद्भावी ।

भगवान हमारे साथ चलें, यदि उसके गुण का छाता हो ।
प्रभु मेरे जीवन यज्ञों के, तुम होता और विधाता हो ॥

—०❀०—

३१ हे वाचस्पति दो बल अपना

ये त्रिषप्ताः परियन्तिविश्वा रूपाणि बिभ्रतः।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे। अथर्व १।१।१

बल वाणी के तुम स्वामी हो, वाणी हमको भी मिल जाये।
हे वाचस्पति दो बल अपना, बोलना हमें भी आ जाये॥

कर दिया सात को तीन गुणा
तब यही अङ्क इक्कीस बना
तीन बचन के सात रूप में
सब शब्दों का सङ्गीत बना।

पिंगल व्याकरण वाक्य आयें, भाषण हमको भी आ जाये।
हे वाचस्पति दो बल अपना, बोलना हमें भी आ जाये॥

कर दिया सात को तीन गुणा
तब यही अङ्क इक्कीस बना
महत् अहम् तन्मात्राओं के
सत रज तम से जग रूप बना।

पूर्ण प्रकृति की विद्याओं के, प्रभु हम भी वक्ता हो जायें।
हे वाचस्पति दो बल अपना, बोलना हमें भी आ जाये॥

प्यारे परमेश्वर वाचस्पति
अभिव्यक्ति प्रकृति में दे दो गति
सृष्टि ज्ञान से देह दृष्टि में
तन में धारण हो शक्ति सुमति।

इस सृष्टि ज्ञान के वाचन से, अध्यात्म प्रगति हम पा जायें।
हे वाचस्पति दो बल अपना, बोलना हमें भी आ जाये॥

सप्तम् रश्मि

शान्ति गीत माला

१ हों विद्युत, इन्द्र सृजनकारी

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या।
शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ।

जीवन अशान्ति को दूर करें, ये दया दृष्टि सब शूर करें।
हो देव जनों की अनुकम्पा, सुख शान्ति हमें भरपूर करें॥

ये अग्नि और विद्युत सारी
हो नहीं हमें पीड़ा कारी
रक्षा का साधन बन जायें
तब सुख की होवे तैयारी

इनके प्रयोग से सुख पायें, उपयोग उचित परिपूर करें।
हो देव जनों की अनुकम्पा, सुख शान्ति हमें भरपूर करें॥

वरणीय वायु विद्युत प्यारी
दे भोग्य हमें वैभव कारी
उत्पादन नित्य बढ़ायें हम
हों विद्युत इन्द्र सृजनकारी।

ये देव हमें हों सुखकारी, रोगों के भय को चूर करें।
हो देव जनों की अनुकम्पा, सुख शान्ति हमें भरपूर करें॥

मेघ सुपोषक विद्युत धारी
कृषि कार्य सफल हों सहकारी
धन धान्य विपुल वर्षा करके
सब सुखकारी दें सुख भारी।

विद्युत की संयुक्त शक्तियां, मानव मन मगन मयूर करें।
हो देव जनों की अनुकम्पा, सुख शान्ति हमें भरपूर करें॥

२ परिपालन से न्याय--धर्म

शं नो भगः शम नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तुरायः
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु ।

धन धान्य दिया जो प्रभु हमको, नहिं बने भार भय भ्राँति हेतु ।
तेरे ये गीत प्रशंसा के, मैं ने गाये सुख शान्ति हेतु ॥

हो ऐश्वर्य आत्म सुख वाला
वन्दना ज्ञान भी सुख वाला
अनुपयोगी बोझ नहीं हो
भण्डार बस्तु हो सुख वाला ।

हों तेरे प्रभु नियम निरूपण, मेरीं उन्नति विश्रांति हेतु ।
तेरे ये गीत प्रशंसा के, मैं ने गाये सुख शान्ति हेतु ॥

यथाथ धर्म कर्तव्य कर्म
मृदु मानवता व्यवहार मर्म
अन्याय दिशा से हट जाए
हो प्रतिपालन नित न्याय धर्म ।

आचरण वरण कर धर्म कर्म, दो कीर्ति कमल कर क्राँति हेतु ।
तेरे ये गीत प्रशंसा के, मैं ने गाए सुख शान्ति हेतु ॥

स्वीकार करो प्रभु पुण्य स्तुति
आनन्द बढ़ाए ये प्रभु स्तुति
स्वर गीत समर्पण सुनो मीत
माधुर्य बढ़ाये गीताहुति

श्रान्त पथिक के क्लान्त क्लेष की, दे दिया गीत ये शान्ति सेतु ।
तेरे ये गीत प्रशंसा के, मैं ने गाये सुख शान्ति हेतु ॥

३ आकाश मेघ विस्तारण

शंनो धाता शमु धर्त्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः।
शं रोदसी बृहती शँ नो अद्रिः शं नो देवानाँ सुहवानि सन्तु।

प्रभु शासन के सारे विभाग, हमको प्रतिदिन सुख भाग करें।
वे हमको सुखी बनायें सब, हम जिससे भी अनुराग करें॥

धारण कर्ता वायु हमारा
और विधर्ता सूर्य हमारा
ये शान्ति सदय सुखकारी हो
करे सदा उत्थान हमारा।

मृदु बायु सुहाये सूर्योदय, जीवन में सुख का जाग करे।
वे हमको सुखी बनायें सब, हम जिससे भी अनुराग करें॥

जो किये जलों का धारण है
आकाश मेघ विस्तारण है
जल वर्षा से जग हर्षा है
यह बनता सुख का कारण है।

ऐश्वर्य हमारे घर आयें, जब मेघ जलों का त्याग करें।
वे हमको सुखी बनायें सब, हम जिससे भी अनुराग करें॥

यह भूमि और वह सूर्य लोक
पर्वत पाहन के सुदृढ़ रोक
विद्वानों को टेर लगाई
दे जाय हमें आलोक ओक।

प्रकृति अङ्ग हों सभी हितैषी, हम उनसे हों सुख माँग करें।
वे हमको सुखी बनायें सब, हम जिससे भी अनुराग करें॥

४ प्राण संचारी वायु

शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शंनो मित्रावरुणावश्विना शम् ।
शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभिवातु वातः ।

सुखकारी वायु वहे प्यारी, जो प्राणों की हो संचारी ।
जीवन में शान्ति मोद आये, आये जीवन में उजियारी ।।

सूरज प्रकाश का दाता है
चन्दा जिसे यह पाता है
यह प्रकाश ही जिसका बल है
वह अग्नि हमारा त्राता है ।

हे सूर्य तुम्हारी कृपा यही, जग ज्योति तुम्हीं ने है वारी ।
जीवन में शान्ति मोद आये, आये जीवन में उजियारी ।।

जो मित्र वरुण कहलाते हैं
वे प्राण अपान सुहाते हैं
ये सारी संसृति में पहले
फिर तन में जीवन लाते हैं ।

सन्तुलन यही जब करते हैं, तभी चले ये श्वास हमारी ।
जीवन में शान्ति मोद आये, आये जीवन में उजियारी ।।

उत्तम कृतियों के जो कर्ता
शुभ कर्म करायें सुख भर्ता
सब ओर वायु गतिमान रहे
जो जीवन की हो दुख हर्ता ।

वायू सूर्य या प्राण शक्तियाँ, सब जीवन की हैं निधि न्यारी ।
जीवन में शान्ति मोद आये, आये जीवन में उजियारी ।।

५ प्रथम आह्वान उषा में

शं नो द्यावा पृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृश्ये नो अस्तु ।
शं न औषधीर्वनिनो भवन्तु शंनो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः ।

जो सूर्योदय के साथ उठा, उसका ही जगना उत्तम है।
प्रिय उषाकाल की सुन्दरतम, यह छाई छटा मनोरम है ।।

आह्वान प्रथम की बेला है
सुख दृश्य लिए अलबेला है
कुछ अन्धकार कुछ है प्रकाश
दोनों का अनुपम मेला है।

उस द्यौ से चलकर धरती पर, रश्मियां कर रहीं संगम हैं ।
प्रिय उषाकाल की सुन्दरतम, यह छाई छटा मनोरम है ।।

अब अन्तरिक्ष का अवलोकन
सब खोल रहा है सुख गोपन
वन वृक्ष वनस्पति औषधियां
मन मोहक दृश्य लिए द्योतन ।

इस उदय काल में विहँस उठा, जग का सारा जड़ जंगम है ।
प्रिय उषा काल की सुन्दरतम, यह छाई छटा मनोरम है ।।

सूर्य आ गया गगनाँगन में
आलोक लोक ले प्रांगण में
सूरज ही लोकों का पति है
प्रभु प्रभा लिए है कण-कण में ।

करता है जग में सृजन यही, इससे ही शान्ति समागम है ।
प्रिय उषा काल की सुन्दरतम, यह छाई छटा मनोरम है ।।

६ रुद्र का रौद्र रूप

शंन इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः।
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्नाभिरिह श्रृणोतु।

हो प्रकट रुद्र ले रौद्र रूप, रक्षा हो जाए अवसर की।
द्वादश मासों की बात नहीं, हैं बात सभी सम्वत्सर की॥

जीवन के हेतु मरुत आओ
और साथ में विद्युत लाओ
यह वायु प्राण है मरुत त्राण
गुण दिव्य साथ मिलकर लाओ।

प्राणों पर सङ्कट आता है, देता बल वायु उपस्कर की।
द्वादश मासों की बात नहीं, है बात सभी सम्वत्सर की॥

हम मरुत वायु से सुख पायें
वर्षानुवर्ष प्रभु गुण गायें
हों प्राण साथ प्रिय मरुतनाथ
उत्पीड़न सारे मिट जायें।

भय-भ्रष्ट दुष्ट कर कष्ट नष्ट, हे रुद्र शान्ति शिव सहचर की।
द्वादश मासों की बात नहीं, है बात सभी सम्वत्सर की॥

यह सूर्य रश्मि संश्लेषक है
जग वस्तु रूप विश्लेषक है
मिल जांय रश्मि की राशि हमें
प्राणों की हर क्षण सेंचक है।

ये गीत प्रशंसा के सुनकर दो शान्ति प्रेम के परिकर की।
द्वादश मासों की बात नहीं, है बात सभी सम्वत्सर की॥

७ यज्ञ मण्डप

शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः ।
शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वःशम्वस्तु वेदिः ।

सुखकारी हो यज्ञ हमारा, देती हो मोद यज्ञ शाला ।
यह वेदी और यज्ञ मण्डप, हों मन्दिर सुन्दर सुख वाला ॥

यज्ञ हव्य सब सोम सुहाना
यह सोम हमें दे वस्तु खजाना
दे सोम शान्ति दे वस्तु कान्ति
दे हमको उत्तम सुख नाना ।
यह सोम सृजक है पिता सौम्य, आनन्द शान्ति देने वाला ।
यह वेदी और यज्ञ मण्डप, हो मन्दिर सुन्दर सुख वाला ॥

यह वेद मन्त्र का उच्चारण
कर रहे यज्ञ का जो पारण
इस यज्ञ भूमि की सब ईंटें
अब करें हमारा सुख धारण ।
इस मण्डप के दृढ़ खम्भ गणित, प्रिय वेदी की रचना वाला ।
यह वेदी ओर यज्ञ मण्डप हो मन्दिर सुन्दर सुख वाला ॥

यह वेदी और यज्ञ आभा
साकल्य सुरभि की सब शोभा
औषधियों की पोषक क्षमता
पल्लवित करे प्रभु की प्रतिभा ।
परिवेश पूर्ण परमेश्वर का, दे हमें मनोहर श्रुतिशाला ।
यह वेदी और यज्ञ मण्डप, हो मन्दिर सुन्दर सुख वाला ॥

---

८ दिशायें चमकाओ

शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्त्रः प्रदिशो भवन्तु ।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं न सिंधवः शमु सन्त्वापः ।

हे सूर्य ताप कुछ न्यून करो, अति शीत ताप से शमन करो ।
जिससे कल्याण हमारा हो, हे सूर्यं वही सन्तुलन करो ।।

हे सूर्य उदय तुम हो जाओ
जग के धन वैभव दिखलाओ
इस जग के हों व्यवहार सिद्ध
वे सभी दिशायें चमकाओ ।

देकर नयनोंमें ज्योति जतन, सुख उन्नति का आकलन करो ।
जिससे कल्याण हमारा हो, हे सूर्यं वही सन्तुलन करो ।।

सब पर्वत भी सुखकारी हों
इनसे दृढ़तायें भारी हों
बह कर आयें रस सरतायें
सुखकारी हों संचारी हों ।

हो बांध पात या हो प्रपात, जल मंगलमय संकलन करो ।
जिससे कल्याण हमारा हो, हे सूर्यं वही सन्तुलन करो ।।

सूरज ही दिशा बताता है
सब जगत वस्तु दिखलाता है
पर्वत का वर्फ गला करके
यह नदियों में जल लाता है ।

जल खींच रश्मि से सागर का, इस धरती पर आगमन करो ।
जिससे कल्याण हमारा हो, हे सूर्य वही सन्तुलन करो ।।

---

६ प्रभु, प्रकृति तुम्हारे सर्वधाम

शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः ।
शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शंनो भवित्रं शम्वस्तु वायुः ।
ऋ० ७।३५।६

नाथ सृष्टि के सभी देवता, हमको सहकारी हो जायें ।
हे नाथ तुम्हारे देव सकल, हमको सुखकारी हो जायें ॥

अन्नादि भोग्य धन धान्य हमें
दे पृथ्वी पोषण मान्य हमें
तुम वायु प्राण के दाता हो
दे मोद प्रशंसित साम्य हमें ।

हो अन्न प्राण से देह सबल, हमको हितकारी हो जायें ।
हे नाथ तुम्हारे देव सकल, हमको सुखकारी हो जायें ॥

हे व्यापक विष्णु सूर्य सुन्दर
बहु मेघ बुलाओ निज कन्धर
जो सुखकारी वर्षा करके
दें जीव सुपोषण भू अन्दर ।

मृदु मेघ गगन में छा जायें, जग के उपकारी हो जायें ।
हे नाथ तुम्हारे देव सकल, हमको सुखकारी हो जायें ॥

बस बात नहीं कुछ धरती की
या गगन मेघ तक बढ़ती की
द्यौ लोक सुमङ्गलकारी हो
यह नित नित हमने विनती की

प्रभु प्रकृति तुम्हारे सर्व धाम, सुख शान्ति बिहारी हो जायें ।
हे नाथ तुम्हारे देव सकल, हमको सुखकारी हो जायें ॥

१० प्रभात बेला में

शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभाती ।
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भु ।
ऋ० ७।३५।१०

ऐश्वर्य भोग्य मुक्ता प्रकाश, दे दिये सूर्य ने सारे हैं।
हे सूर्य नहीं उपकार एक, अगणित उपकार तुम्हारे है ।।

यह सविता जग का निर्माता
है यही सुपोषक जग त्राता
कीटाणु और कृमि नाशक है
यही तिमिर को दूर भगाता ।

निशा तिरोहित करके सूरज, यह लाता उषा उजारे हैं।
हे सूर्य नहीं उपकार एक, अगणित उपकार तुम्हारे हैं ।।

मधुरिम प्रभात की वेलायें
नित विभावरी होकर आयें
दें दृश्य सृष्टि के मन मोहक
ये मृदुल पुष्टि का सुख लायें ।

सूरज तुमने दी उषा हमें, जीवन में किए जगारे हैं।
हे सूर्य नहीं उपकार एक, अगणित उपकार तुम्हारे हैं ।।

नभ मेघ सूर्य ने मँडराये
जल वृष्टि प्रजा इनसे पाये
खेतों का स्वामी प्रिय किसान
धरती में सोना उपजाये ।

कर भूमि शमन कृषि कर्म सघन, कृषि त्रायमाण रवि प्यारे हैं।
हे सूर्य नहीं उपकार एक, अगणित उपकार तुम्हारे हैं ।।

---

११ हो कर्म प्रकट जब ज्ञानी में

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु ।
शमभिषाचः शमुरातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः ।
ऋ० ७।३५।११। अ० १६।१३।२

मानव विशेष या साधारण, हमको सारे सहयोग करें ।
हो मनुज-मनुज में प्रेम भाव, सब आपस में सहयोग करें ।।

देवता तुल्य बलवान बड़े
जिनमें उत्तम हों ज्ञान गढ़े
पर ज्ञान न कोरा ज्ञान रहे
हो ज्ञान कर्म आचरण चढ़े ।

प्रिय कर्मशील विद्वान सभी, इस जग का सुख उपभोग करें ।
हों मनुज-मनुज में प्रेम भाव, सब आपस में सहयोग करें ।।

हो ज्ञान हृदय का वाणी में
वाणी का कर्म कहानी में
पा जाय दिशा साधारण जन
हो कर्म प्रकट जब ज्ञानी में ।

सब ज्ञान कर्म या धन दाता, निज दान हमें दे योग करें ।
हो मनुज-मनुज में प्रेम भाव, सब आपस में सहयोग करें ।।

धरा लोक की हव्य शक्तियां
अन्तरिक्ष की भव्य शक्तियाँ
विद्वान हमें सब सिखलायें
देव लोक की दिव्य शक्तियां ।

विज्ञान वान सब त्रायमान, हम सुखकारी उपयोग करें ।
हो मनुज-मनुज में प्रेम भाव, हम आपस में सहयोग करें ।।

---

१२ विद्वान शिल्प की शाला

शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः ।
शं नः ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु ।
ऋ० ७।३५।१२ अ० १६।११।१

वेदों की विद्या के पालक, विद्वान शिल्प की शाला है।
विद्वान सुकर्मठ हाथों से, करते निर्माण निराला हैं ॥

वेदों का सत्व ज्ञान जाने
उसका नित विज्ञान बखाने
वही पालना सुख से करते
विज्ञ क्रिया से वरें खजाने ।

नित नूतन आविष्कार किये, श्रुति से विज्ञान निकाला है ।
विद्वान सुकर्मठ हाथों से, करते निर्माण निराला हैं ॥

वही अश्व को वश में करते
यान बनाकर यात्रा करते
यही गाय की सेवा द्वारा
जग में दुग्ध पोषणा करते ।

भाँति भांति सब सामिग्री, विद्वान बनाने वाला है।
विद्वान सुकर्मठ हाथों से, करते निर्माण निराला हैं ॥

अपने सुन्दर शिल्प ज्ञान में
भवन बनाये आसमान में
हैं पितृ तुल्य ये हितकारी
सब भूत भविष्यत वर्तमान में ।

विद्वान सहायक होते हैं, देते जीवन की ज्वाला हैं।
विद्वान सुकर्मठ हाथों से, करते निर्माण निराला हैं ॥

---

१३ नभ मेघ महा हितकारी

शं नो अज एकपाद देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः ।
शं नो अपां नपात् पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपाः ।
ऋ०म०७सू०३५१-

दो सुख सन्देश नाथ हमको, सब दिव्य शक्ति अनुकूल रहें ।
विद्वान बनें सब सुख निधान, यह जग में बनकर फूल रहें ॥

हो सूरज दिव्य गुणों वाला
दे हमें ऊर्जा उजियाला
नभ मेघ महा हितकारी
हो पानी बरसाने बाला ।

जल सागर के हों सुखकारी, सम्यक समुद्र के कूल रहें ।
विद्वान बनें सब सुख निधान, यह जग में बनकर फूल रहें ॥

जिसके जल पावन पूत रहें
ले विद्युत भार सपूत बहें
जल प्रचुर बनायें बहु विद्युत
संसृति में हर्ष अकूत रहे ।

सूर्य सिन्धु जल विद्युत ऊर्जा, जीवन परित्राण त्रिशूल रहें ।
विद्वान बनें सब सुख निधान, यह जग में बनकर फूल रहें ॥

यह धरती रूप अनेक लिए
निर्माण प्रगति की टेक लिए
प्रिय दिव्य शक्ति यह विद्युत की
हो जगत प्राण प्रत्येक लिए ।

सब देव जनों की विद्युत से, जग में विकसित सुख मूल रहें ।
विद्वान बनें सब सुख निधान, यह जग में बनकर फूल रहें ॥

१४ हमको सरताज बना जा

इन्द्रो विश्वस्य राजति । शं नोऽअस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ।

य० ३६।८

ऐश्वर्य सर्व के स्वामी हो, हे इन्द्र विश्व अधिराजा ।
दे आनन्द अंश कुछ अपना, हे ईश हमारे राजा ॥

वह इन्द्र हमारा ईश्वर है
ऐश्वर्यवान जगदीश्वर है
पल-पल प्रकाश का दाता वह
सबका रक्षक जगदीश्वर है।

सर्वोच्च राज राजेश्वर आ, रक्षा के हाथ बढ़ा जा ।
दे आनन्द अंश कुछ अपना, हे ईश हमारे राजा ॥

द्विपदे चौपदे प्राणी सारे
पुत्र मित्र या भृत्य हमारे
हाथी घोड़े पशु धेनु सर्व
हों सहयोगी सभी सुखारे ।

अपना संरक्षण सबको दे, हे परम मान्य महाराजा ।
दे आनन्द अंश कुछ अपना, हे ईश हमारे राजा ॥

हे इन्द्र विश्व पर राज्य करो
सब मनुज वर्ग सम राज करो
पशु प्राणी सबकी रक्षा कर
इनके सुख का सब साज वरो ।

सम्राट प्रजा के परिपोषक, हमको सरताज बना जा ।
दे आनन्द अंश कुछ अपना, हे ईश हमारे राजा ॥

---

१५ मेघों की मधुरस वर्षा

शं नो वातः पवतां् शं नस्तपतु सूर्यः ।
शं नः कनिक्रदेव पर्जन्योऽअभि वर्षतु । य० ३६।१०

ये चक्षु देखते तुमको हैं, निज दृश्य इधर भी दर्शा ।
प्रिय प्रकृति सम्पदा सुखदा की, हे नाथ करो अब वर्षा ।।

तन प्राण हमारा विकसा दो
सुखकारी बातास बहा दो
मन्द वायु शीतल सुगन्ध मय
जीवन में सञ्चार करा दो ।

स्पर्श सुखद ले साथ बहे ये, वायु हमें दे अब हर्षा ।
प्रिय प्रकृति सम्पदा सुखदा की, हे नाथ करो अब वर्षा ।।

यह सूर्य सृजन साधन विशेष
हो तप्त सदा यह अग्नि वेश
निज ताप ज्योति की ऊर्जा से
दे सूर्य हमें सुख निर्निमेष ।

यह सूर्य सृष्टि का सम्पोषक, दे हमको शुभ उत्कर्षा ।
प्रिय प्रकृति सम्पदा सुखदा की, हे नाथ करो अब वर्षा ।।

ये मेघ मोद के साधन हैं
इनसे पाती धरती धन है
मेघों की शब्द गर्जना से
जग का सम्यक सम्बर्द्धन है ।

मेघों की मधुरस वर्षा से, हो सृष्टि हृदय में हर्षा ।
प्रिय प्रकृति सम्पदा सुखदा की, हे नाथ करो अब वर्षा ।।

—:*★*:—

१६ दिन प्रकाश दे निशि विकास

अहानि शं भवन्तु नः शँ् रात्री प्रति धीयताम् ।
शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शंन इन्द्रावरुणा रातहव्या ।
शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः ।
य०।३६।११

यह आयु व्यर्थं नहीं जाए, दो नाथ स्वयं संदर्शन ।
अपने जीवन का क्षण क्षण, पा जाय नाथ उत्कर्षण ॥

आनन्द दिवस के पायें हम
सब रजनी सुखी बितायें हम
दिन रात आपके पथ पर प्रभु
बढ़ते ही बढ़ते जायें हम ।

दिन प्रकाश दे निशि विकास, हो सुखी सदा सहवर्तन ।
अपनें जीवन का क्षण क्षण, पा जाय नाथ उत्कर्षण ॥

हे नाथ आपकी सूर्य विभा
अथवा यह प्रकटी अग्नि प्रभा
आधार हमारी रक्षा का
सन्मार्ग दिखाये प्रिय प्रतिभा ।

हे काल पते रक्षा का, प्रिय करो नाथ सम्बर्द्धन ।
अपनें जीवन का क्षण क्षण, पा जाय नाथ उत्कर्षण ॥

वायु चन्द्र शुचि यज्ञ हव्य से
पूर्ण आयु बल गति गव्य से
हो जगत युद्ध पुरुषार्थ सिद्ध
राज-प्रजा हों सुखी द्रव्य से ।

बल विद्या शान्ति बहाओ, जीवन में हो सुख वर्षण ।
अपने जीवन का क्षणक्षण, पा जाय नाथ उत्कर्षण ॥

---

१७ जल दिव्य गुणों के

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तुनः।
य० ३६।१२

सब ओर नाथ हो कृपा साथ, मृदुजीवन जल को बरसाओ।
अब और नहीं तुम तरसाओ, हे ईश्वर पानी बरसाओ॥

जल दिव्य गुणों के धारी हों
हम सबको ही हितकारी हों
दें हमको हर्ष अभीष्ट श्रेष्ठ
जग जीवन के सुखकारी हों।

बस एक दिशा दो दिशा नहीं, जल सभी दिशाओं में लाओ।
अब और नहीं तुम तरसाओ, हे ईश्वर पानी बरसाओ॥

जल को ही लेकर प्राण बचें
आचमन जगत निर्माण रुचें
मानव पशु पादप सब प्राणी
इससे कृषि कर्म महान रचें।

भू अन्तस्तल में तब आओ, जब सागर में से उठ जाओ।
अब और नहीं तुम तरसाओ, हे ईश्वर पानी बरसाओ॥

यदि प्यास नहीं मिट पाएगी
जीवन कलिका मिट जाएगी
जल मधुर प्रदान करो प्यारे
यह संसृति तब बच पाएगी।

हर ओर देव तुम मुस्काओ, प्रभु जीवन रस को सरसाओ।
अब और नहीं तुम तरसाओ, हे ईश्वर पानी बरसाओ॥

—०*०—

१८ सुखमयी शान्ति

द्यौ. शांतिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शांतिरौषधयः शान्ति। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाःशान्तिर्ब्रह्म शान्ति। सर्वँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।

य० ३६।१७ अथ० १६।६।१४

आनन्द शान्ति के दाता, यह जगत शान्ति पा जाये।
जब जगत शान्ति यह पाये, तब हमें शान्ति मिल पाये॥

सब लोकों के ऊपर भाये
वह द्यौ लोक शान्त हो जाये
यह वायु आदि युत अन्तरिक्ष
निरुपद्रव प्रशान्ति को पाये।

यह भूमि, भूमि के साधन, सब नित्य शान्ति को पायें।
जब जगत शान्ति यह पाये, तब हमें शान्ति मिल पाये॥

यह जल और वस्तुएँ जल की
सब औषधियाँ तृण निर्मल की
प्रिय बृक्ष बनस्पति सारे ही
हमें शान्ति दें विश्व विमल की।

विज्ञानं शान्ति वे पायें, जो वेद शान्ति को गायें।
जब जगत शान्ति यह पाये, तब हमें शान्ति मिल पाये॥

गुण सूर्य किरण इन्द्रिय वारा
स्थूल सूक्ष्म सब जगत प्रसारा
सब जीव शान्ति सुख नित पायें
हो शान्त क्रोध सबका सारा।

हो स्वयँ शान्ति सुख वाली, हम प्रगति शान्ति तब पायें।
जब जगत शान्ति यह पाये, तब हमें शान्ति मिल पाये॥

—०*०—